विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। मंगलवार, 6 अगस्त 2024

मज़बूत है इकॉनमी

पिछले हफ्ते अमेरिका सहित दुनिया भर के शेयर बाजारों में जो गिरावट शुरू हुई, उसका असर सोमवार को भी भारतीय बाजार पर दिखा। अमेरिका में बिकवाली वहां मंदी आने के डर से शुरू हुई। इस्राइल-ईरान के बीच युद्ध की आशंका ने भी ग्लोबल सेंटिमेंट खराब किया है।

टेक कंपनियों से निराशा | अमेरिकी मार्केट में इससे पहले जो तेजी चली आ रही थी, वह ज्यादातर टेक्नॉलजी कंपनियों तक ही सीमित थी। लेकिन जून तिमाही के इन कंपनियों के रिजल्ट आए तो उससे मार्केट को निराशा हाथ लगी।

ब्याज दरों में कटौती में देरी | अमेरिका में मंदी का डर बढ़ने से वहां के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की पॉलिसी को लेकर भी सवाल पूछे जा रहे हैं। सवाल यह है कि क्या उसे ब्याज दरों में कटौती शुरू कर देनी चाहिए थी? वैसे, फेडरल रिजर्व कह चुका है कि वह जल्द ब्याज दरों में कटौती शुरू करेगा।

AI Image

लंबी अवधि के निवेशक न घबराएं

येन में गिरावट | मार्केट पर जापानी की मुद्रा येन में आई गिरावट का भी असर हो रहा है। बैंक ऑफ जापान ने हाल ही में ब्याज दरें बढ़ाई हैं। असल में, बड़े विदेशी निवेशक वहां बेहद कम ब्याज दरों पर कर्ज लेकर उसे भारत सहित दुनिया के दूसरे बाजारों में लगाते हैं। इसे येन कैरी ट्रेड कहा जाता है। ब्याज दरों में बढ़ोतरी और येन में आई गिरावट की वजह से अब ऐसे सौदे काटे जा रहे हैं। इससे भी मार्केट पर दबाव बढ़ा है।

भारत मजबूत | ग्लोबल बिकवाली की वजह से भारतीयों बाजार पर भले ही दबाव बढ़ा है, लेकिन इसकी तुलना अमेरिका के टेक्नॉलजी शेयरों में तेजी वाले मार्केट से नहीं की जा सकती। अव्वल तो भारतीय इकॉनमी बेहद मजबूत है। पिछले वित्त वर्ष में GDP ग्रोथ 8.2% रही, जो दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज थी। इस वित्त वर्ष में भी उसका यह दर्जा बना रह सकता है। बड़ी बात यह भी है कि भारतीय बाजार की विदेशी निवेशकों पर निर्भरता बेहद कम हो गई है और डोमेस्टिक इन्वेस्टर्स इसकी ताकत बने हुए हैं।

घबराने की जरूरत नहीं | वैसे, यह बात सही है कि भारतीय बाजार का वैल्यूएशन कुछ अधिक हो गया था, लेकिन किसी भी हाई ग्रोथ मार्केट को अक्सर ऊंचा वैल्यूएशन मिलता है। और, भारतीय कंपनियों की मुनाफे में बढ़ोतरी की रफ्तार को देखें तो यह वैल्यूएशन अधिक नहीं लगता। इसलिए, भारतीय निवेशकों को इस गिरावट से घबराना नहीं चाहिए। अगर उन्होंने लंबी अवधि के लिए क्वॉलिटी स्टॉक्स में निवेश किया है तो उनके पैसा बनाने की संभावना बनी रहेगी। लेकिन यह भी सच है कि दुनिया भर के बाजारों में बिकवाली के असर से भारतीय बाजार बचे नहीं रह सकते।

धूप-छांव

स्वाद जीने का

प्रणव प्रियदर्शी

कई बार ऐसा होता है कि हम खाना खा तो लेते हैं, लेकिन स्वाद नहीं आता। इस पर एक विज्ञापन भी पिछले दिनों आया था जो खासा चर्चित हुआ- स्वाद नहीं आया। लेकिन बात उसकी नहीं। बात है फीलिंग की। हम एक अनुभव से गुजरें और उस अनुभव का फील न आए, तो इसे क्या कहेंगे? एक स्तर पर कहूं तो मुंबई और दिल्ली का यह फर्क लंबे समय तक सालता रहा था।

'यार, मुंबई में मौसम के उतार-चढ़ाव का कुछ पता ही नहीं चलता। ठंड आकर चली जाए और महसूस ही न हो, या कब ठंड हुई? गर्मी बगैर तपाए निकल जाए, तो उसे गर्मी कहलाने का क्या हक है? दिल्ली में देखो, क्या मजाल कि ठंड आए और आपकी हड्डियां न कंपकंपा उठें। गर्मी के दिनों में पेट के भीतर का पानी भी सूखता हुआ महसूस होता है। इसे कहते हैं मौसम के अलग-अलग रंग।' मगर यह बात भी सही है कि इस तरह के खयाल तभी आते हैं जब आप मुंबई में कुछ साल रह जाएं। वहां के मौसम की नरमी, उसकी मुलायमियत आपको इतनी अपनी लगने लगे कि उसके छूटने का डर न रह जाए। तभी दिल्ली और अन्य स्थानों के मौसम की सख्ती आपको भली लगती प्रतीत होती है, वरना तो उसकी मार से त्राहिमाम कर रहे लोगों से पूछिए, उन्हें कैसा लगता है मौसम का उतार-चढ़ाव!

बहरहाल, बात हो रही थी स्वाद की। जीने का स्वाद तो जरूरी है। मिर्च खा लें और तीखा न लगे तो फिर मिर्च खाना ही क्यों? यही सवाल मुझे कबीर के सामने भी एतराज की मुद्रा में खड़ा कर देता है। 'दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।' उनकी शिकायत है कि झीनी-झीनी बीनी गई जिंदगी की चादर को सूर, नर, मुनि सब ओढ़ते हैं और ओढ़कर मैली कर देते हैं। अब ओढ़ने से चादर मैली होती है तो हो। आपका ध्यान चादर को ज्यों की त्यों धर देने पर है। आप धरिए। मैं तो उसे ओढ़ूंगा। अगर चादर शिद्दत से ओढ़ी ही न जाए, तो बुनने वाले ने बुनी क्यों, देने वाले ने दी क्यों। चादर का कोई इस्तेमाल ही न होना तो उसके पीछे लगे समस्त श्रम के औचित्य पर सवाल खड़ा कर देता है। एक तरह से यह उन सबका अपमान है।

यहां भी गुस्सा कबीर से नहीं है। उसकी जड़ में है वही शिद्दत की तलाश। जीने का फील तो मिले, स्वाद तो आए जीने का! पर ध्यान रहे, स्वाद की यह तड़प दुख में ही है ज्यादा। दुख यानी कर्दो और गर्मी। मॉनसून में बारिश की बूंदें तो मुंबई में भी दिल्ली या किसी भी दूसरे शहर जैसा ही सुकून लाती हैं। मगर वह सुकून भी ज्यादा स्वाद तभी देता है जब उससे पहले मौसम की गर्मी प्राण सुखा चुकी हो।

बोल वचन

लगा दी लुकारी

राहुल पाण्डेय

गांव में हमारे एक पटीदार थे, नाम था लुकारी तिवारी। और जैसा नाम, वैसा काम। कहीं जाते हुए कोई खांस दे या छींक दे तो सुलग जाएं। खाते हुए कोई औरत हंस दे तो थाली-लोटा फेंक फरवारे में खाट डालकर दो दिन पड़े रहें। अक्सर होता है कि जो जितना सुलगता है, उसे उतना ही चिढ़ाया भी जाता है। ऊपर से किसी का नाम ही लुकारी हो, तब तो उसकी मुसीबत क्या कहने! लुकारी क्या है? लुकारी फूस, पुआल या किसी लकड़ी का सुलगता हुआ एक टुकड़ा है, जिसमें कभी-कभार एक लौ सी भी उठती है। यह चूल्हा या तपता जलाने के काम में आता है, दुश्मनी हो तो छप्पर फूंकने के काम में भी। दबंग ताल ठोककर छप्पर में लुकारी छुआने की बात मानते हैं, और बाकी अक्सर यही कहते हैं कि गलती से छू गई। वैसे रिश्ते-नातों में भी लुकारीबाजी खूब चलती है। कभी कोई फूफा या कोई मौसा आकर लुकारी लगा जाता है और रिश्ते बरसों जलते तवे पर छनछनाते रहते हैं। बड़े-बूढ़े ऐसों को अच्छे से पहचानते हैं और ताकीद करते हैं कि फलाने के सामने मुंह ज्यादा ना फैलाना, वो लुकारी लगाता है। काफी खोजबीन करने पर लुकारी शब्द दो ही भाषाओं में मिला, एक अवधी और दूसरी मगही। अवधी में लुकारी तो मगही में इसे लुकवारी कहते हैं। काम इसका दोनों जगहों पर एक ही है, आग सुलगाना। आग आती है तो पहली की तरह सब बढ़ा ले जाती है। लेकिन लुकारी बूंद-बूंद सुलगती वो बरसात है, जो अपनी उमस से न चैन लेने देती है और न ही सांस। इसलिए इंग्लिश में इसके लिए कोई शब्द हो भी नहीं सकता। इतना सुलगता और सुलगाता शब्द सिर्फ लोकभाषा ही धारण कर सकती है।

US और रूस में कैदियों की अदला-बदली महत्वपूर्ण, लेकिन बेहतर होगा संघर्ष ख़त्म किया जाए

पूतिन-बाइडन की पहल का क्या है अर्थ

अमिताभ सिंह

शीत युद्ध के खत्म होने के बाद रूस और पश्चिमी देशों के बीच कैदियों की अब तक की सबसे बड़ी अदला-बदली हुई। कुल 26 कैदी रिहा किए गए, जिनमें दो नाबालिग भी शामिल हैं। तुर्किये की मदद से अमेरिका और रूस इस अदला-बदली के लिए समझौते तक पहुंचे। यह कदम कई मायनों में अनोखा रहा। इसने शीत युद्ध की याद ताजा करा दी, जहां पूरी दुनिया अमेरिका और सोवियत संघ के बीच हो रही घटनाओं की बंधक थी। यह वर्तमान में दो प्रमुख शक्तियों (और शायद चीन) के बीच अंतरराष्ट्रीय संबंधों की दिशा को भी दर्शाता है।

मजबूरी का समझौता | एक-दूसरे के यहां बंद कैदियों को बंधक की तरह देखा जाता है। कई बार इस तरह की रिहाई कानून के खिलाफ होती है। कैदी कई बार हत्या जैसे गंभीर अपराध के लिए जेल में बंद होते हैं। लेकिन, इस तरह के समझौते के चलते सरकारों को उन्हें छोड़ना पड़ता है। शीत युद्ध के दौरान, कैदियों का आदान-प्रदान आमतौर पर विभाजित बर्लिन के ग्लेनिक ब्रिज पर किया जाता था। इसे जासूसों का पुल भी कहते थे।

शीत युद्ध की याद | कैदियों की मौजूदा अदला-बदली 50 और 60 के दशक की याद दिलाती है, जब शीत युद्ध की प्रकृति अनिश्चित और शायद खतरनाक थी। उस समय खेल के नियम परिभाषित नहीं थे। 70 और 80 के दशक में जाकर शीत युद्ध संस्थागत हुआ। हम 50 और 60 के दशक का दोहराव देख रहे हैं। इस कोल्ड वॉर 2.0 के दोनों ही पक्षों के सामने अनिश्चित स्थिति है। दोनों आगे निकलने की कोशिश कर रहे हैं और जानते हैं कि स्थिति बिगड़ी, तो नतीजा अनिश्चित होगा।

नेतृत्व को फायदा | यह डील दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व के लिए महत्वपूर्ण है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के लिए उनके कार्यकाल की यह एक प्रमुख उपलब्धि हो सकती है। इसी तरह, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पूतिन को इस समझौते से अपने देश में यह साबित करने में मदद मिलेगी कि उनके नेतृत्व में रूस में सब ठीक है। मौजूदा हालात में यह उनके लिए काफी मायने रखता है।

दो नामों की चर्चा | जिन कैदियों की रिहाई हुई, उनमें दो नाम ऐसे हैं, जो रूस और जर्मनी के लिए बहुत मायने रखते हैं। इनमें एक है वॉल स्ट्रीट जर्नल के रिपोर्टर इवान गर्शकोविच और दूसरे हैं वादिम क्रासिकोव। इवान को रूस ने जासूसी के आरोप में गिरफ्तार किया था। वहीं, वादिम पर आरोप है कि उन्होंने मॉस्को मेट्रो बम धमाकों के आरोपी जेलिमखान खानगोशविली की हत्या की। गिरफ्तारी के डर से जेलिमखान भागकर जर्मनी चला गया था। उसकी हत्या करके क्रासिकोव रूस में नैशनल हीरो बन गए।

समझौते का असर

- बाइडन और पूतिन की व्यक्तिगत उपलब्धि
- रूस और पश्चिम के बीच तुर्किये का कद बढ़ा
- अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की कमजोरी उजागर

नवलनी की मौत का असर | पहले प्लान था कि क्रासिकोव को इस साल जनवरी में एलेक्सी नवलनी के बदले रिहा किया जाएगा। नवलनी, पूतिन और उनकी नीतियों के कट्टर आलोचक थे। वह रूस की आर्कटिक पीनल कॉलोनी में रहस्यमय परिस्थितियों में मरे पाए गए। इससे कैदियों की अदला-बदली में देरी हुई। पूतिन ने टकर कार्लसन के साथ अपने इंटरव्यू में क्रासिकोव की रिहाई पर भी चर्चा की थी।

तुर्किये का महत्व | मौजूदा संघर्ष के बीच तुर्किये ने महत्वपूर्ण मध्यस्थ की भूमिका निभाई और दोनों पक्षों के बीच पुल का काम किया है। रूस-यूक्रेन संघर्ष में भी तुर्किये की ऐसी ही भूमिका देखने को मिली थी। तब उसने अफ्रीका में खाद्य संकट को हल करने के लिए यूक्रेन से अनाज भेजने में मदद की थी। तुर्किये नैटो का सदस्य है। काला सागर के रास्ते होने वाले व्यापार में वह एक ट्रांजिट पॉइंट है। इसके अलावा पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच एक भू-रणनीतिक खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है। इस पूरी कवायद में तुर्किये की स्थिति उसकी भूमिका को बहुत बढ़ा देती है।

नीति का अभाव | दुर्भाग्य से देशों के बीच कैदियों की इस तरह से अदला-बदली को नियंत्रित करने के लिए कोई नीति या सिद्धांत नहीं है। ऐसे फैसले आमतौर पर अपनी जरूरतों और आपसी रिश्ते के आधार पर लिए जाते हैं। देशों के अपराधों पर इंटरपोल और इंटरनैशनल क्रिमिनल कोर्ट (ICC) कार्रवाई कर सकते हैं। ज्यादातर देशों ने इंटरपोल एक्ट पर साइन किया है। इस एक्ट को संयुक्त राष्ट्र ने अपनाया है और यह प्रभावी भी साबित हुआ है।

ICC की कमजोरी | इंटरनैशनल क्रिमिनल कोर्ट का गठन 1998 में किया गया था। इसे मुख्य तौर पर मानवता के खिलाफ अपराध के लिए बनाया गया था। लेकिन, कई बड़े देश इसके सदस्य नहीं बने, जिनमें अमेरिका, भारत, चीन और रूस भी शामिल हैं।

आखिरी उपाय | इंटरपोल और इंटरनैशनल क्रिमिनल कोर्ट जैसी संस्थाओं की सबसे बड़ी खामी यह है कि दो देश उन कैदियों की भी अदला-बदली कर सकते हैं जो कठोर अपराधी हों या जिन्होंने मानवता के खिलाफ अपराध किया हो। खैर, यह आखिरी बार नहीं है जब कैदियों की अदला-बदली हुई। ऐसा फिर से होगा। मुद्दा यह है कि ऐसे समझौतों के बजाय बड़ी ताकतों के बीच संघर्ष को खत्म किया जाए।

(लेखक स्कूल ऑफ इंटरनैशनल स्टडीज, JNU में असोसिएट प्रफेसर हैं)

जेल जाने से डरने का या नई डरने का

दीपक पाचपोर

अपुन तुमसे एक सवाल पूछेगा। बोले तो फ्री माइंड से जवाब देने का। मर्जी होएगा तो देने का नई तो मना कर देने का। अपुन का सवाल ऐसा होताए भिड़ू, कि तुम जबी पॉलिटिक्स में आताए तबी क्या सोच के आताए? तुम बोलेगा कि समाजसेवा का वास्ते आताए। तबी अपुन कैताए इसका वास्ते तुमकूं कोई स्वयंसेवी संगठना बनाना मांगताए। इदर आके तुम किकसा सेवा करेंगा? इदर सब खा-पी के मस्त सेठ, धनी लोग बईठेला। उसकूं तुमारा सेवा-विवा नई मांगताए। फिर तुम कहेंगा कि कोई इलेक्शन लड़ने का वास्ते पॉलिटिक्स में आताए। अपुन बताताए बॉस, तिकिट का इदर कोई स्यारटी नई देने कूं सकताए। अक्खा लोग जानताए कि वर्कर और नेते लोग हजार होएंगा पन तिकिट दो-चार कूं मिलेंगा।

अबी बचेला फेमस होने का वास्ते इदर आएला। अईसा बोलेंगा तबी तुम ठीक पकड़ेलाए, पन पॉलिटिक्स का भीतर तुम अच्छा काम करके फेमस नई होने कूं सकताए। जित्ता मवालीगिरी करेंगा तुमारा नाम उत्तांईच जल्दी फेमस होएंगा। पन सबकूं जल्दी फेमस होने कूं नई मिलताए। बोले तो उदर बी बेटिंग होताए। जईसा कोई मार्केट नई तो रेलवे स्टेशन एरिया का कईसा छोटा-मोटा पंटर लोग दादा का मरने का वेट करताए, वईसाईच। हफ्तावसूली गैंग का बॉस जबी मरेगा नई तो तड़ीपार होएगा तबी कोई पंटर का मेन दादा बनने का नंबर आएगा।

लास्ट टू लास्ट तुम बोलेंगा कि 'पईसा कमाने का वास्ते कोई बी इदर आताए। समाजसेवा, देशभक्ति सब पैले बोलेंगा पन जबी तिकिट पाएंगा तबी वो सब कूं तेल लेने कूं भेजेंगा। अबी इलेक्शन का भीतर खर्चा किएला तबी इदर कूं बईठेलाए। वसूल करना मांगताए कि नई? फिर, पांच बरस बाद उसकूं फिर से रोकड़ा का जरूरत पडेगा तबी किदर हात फैलाएंगा?' करेक्ट!

अबी कोई बी पॉलिटिक्स में आताए, तबी जेल जाने का फुल टू रिस्क होताए। अपुन तुमकूं बताताए कि तीन कैटिगरी का लीडर होताए। एक, धरना-मोर्चा में जाएंगा पन जबी पुलिस का पकड़ने का टाइम आएंगा तबी पतली गली से कट लेगा। दूसरा वाला अईसा होताए कि कोई मोर्चा, प्रदर्शन का भीतर जाएंगा तबी पैले से जाके पोलिस वैन का भीतर बईठ जाएंगा। उसकूं बोलेंगा पोलिस वाला कि, 'बाबा उतरो, किसी कूं बी अरेस्ट करने का ऑर्डर नई होताए।' तो बी वो हात-पैर जोड़ के बोलेंगा कि, 'थोड़ा देरी तलक वैन का भीतर बईठने देने का। एकाध फोटो-विटो हो जाएंगा तबी अपुन उतर जाएंगा।' तीसरा कैटिगरी वाला नेता पैले से बोमाबोम करेंगा कि उसकूं पुलिस पकड़ेगा। जबी पुलिस पकड़ेगा तबी वो बोलेंगा कि 'अपुन पैले से तुमकूं बोला था कि सरकार अपुन से डरताए। इस करके पकड़ेला।' नई पकड़ेगा तबी पेपर, टीवी वाला बोलेंगा कि 'सरकार नेता से डरताए।' पुलिस वाले का पकड़ेगा तबी प्रॉब्लेम, नई पकड़ेगा तबी बी खाली पीली का मचमच। इस करके अपुन का बाबूराव बोलताए कि जेल जाने से घबरने का नई। तुमकूं जेल में डालताए तबी तुम नेता बनेगा। नई पकड़ताए तबी अऊर बड़ा नेता बनताए।

एक बखत बाबूराव से बी अपुन येईच पूछेला कि जेल जाने से डरने का कि नई डरने का? वो एक टाइम मुंडी ऊपर से नीच्चू किएला अऊर एक बखत लेफ्ट टू राइट घुमाएला। अपुन समजा नई कि वो हां बोलताए कि नई बोलताए। अपुन बोला, 'बाबूराव, एकदम परफेक्ट बताने का कि तुम हां बोलताए कि नई?' बाबूराव- फायदा होताए तो जेल जाने का, नई तो खाली बोलने का कि अपुन कूं गीरमेट अरेस्ट करेंगा।

AI Image

खाली पीली

शेयर करें अपने अनुभव

आम मुंबइया भाषा में यह लेख कैसा लगा हमें बताएं nbtreader@timesofindia.com पर, और सब्जेक्ट में लिखें-'खाली पीली'

कोटे में कोटा पर क्यों उलझे बड़े दल

नरेंद्र नाथ

नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली NDA सरकार के सामने बीते हफ्ते सुप्रीम कोर्ट के एक बड़े फैसले के दुविधा पैदा कर दी है। उस फैसले को अगले कुछ दिनों में देश की राजनीति पर बड़ा असर देखा जा सकता है। इसकी आहट अभी से दिखने लगी है। सुप्रीम कोर्ट ने अहम फैसले में कहा है कि SC-ST रिजर्वेशन के भीतर राज्य सरकारें अलग कोटा बनाकर आरक्षण का लाभ दे सकती हैं। सात जजों की बेंच के बहुमत से दिए फैसले के मुताबिक, राज्यों के पास आरक्षण के लिए SC-ST' में सब-कैटिगरी बनाने की शक्तियां हैं। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने यह भी साफ किया है कि राज्य को सब-कैटिगरी बनाने के लिए डेटा तैयार करना होगा और साबित करना होगा कि जिसे कैटिगरी में शामिल किया जा रहा है, वह आरक्षण के योग्य है। इस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि क्रीमी लेयर का सिद्धांत OBC की तरह SC-ST पर भी लागू होता है, जिसके बाद इससे जुड़ी बहस नए सिरे से शुरू हो गई। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले ने सत्तारूढ़ दल BJP और मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस के सामने कितनी दुविधा भरी स्थिति पैदा कर दी है, इसका अंदाजा इसी बात से हो जाता है कि अब तक दोनों दलों ने औपचारिक रूप से इस फैसले पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं दी है। दोनों दलों के नेता इस मुद्दे पर कुछ भी कहने से परहेज कर रहे हैं। दोनों दल अभी तक तय नहीं कर पाए हैं कि वे फैसले के साथ दिखें या इसका विरोध करें।

राजनीतिक दल असमंजस में

राजनीतिक दलों के इस असमंजस के पीछे है फैसले का विभिन्न तबकों पर पड़ने वाला अलग-अलग प्रभाव। जानकारों के अनुसार दक्षिण भारत के राज्यों में SC-ST' कोटे में सब-कैटिगरी बनाने की मांग सालों से लंबित थी और वहां इस फैसले का अधिकतर लोग स्वागत कर रहे हैं। तेलंगाना में कांग्रेस शासित सरकार के सीएम रेवंत रेड्डी ने फैसले के तुरंत बाद कह दिया कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले का सबसे पहले पालन उनका राज्य करेगा। दिलचस्प है कि चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तेलंगाना में ही इस सब-कैटिगरी मांग का समर्थन आमसभा में किया था। दक्षिण के दूसरे राज्य और वहां के तमाम राजनीतिक दल भी फैसले के समर्थन में गए।

हिंदी पट्टी के राज्यों में इसका ठीक उलटा असर देखा गया। खुद NDA की सहयोगी लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास गुट के नेता और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि फैसले पर पुनर्विचार हो। उनकी पार्टी सुप्रीम कोर्ट में पुनर्विचार याचिका भी दायर कर रही है। मायावती, तेजस्वी यादव सहित इलाके के तमाम नेताओं ने इस फैसले का विरोध किया। उन्होंने केंद्र सरकार से अध्यादेश लाकर फैसला पलटने को कहा है। इसके अलावा दलित संगठन भी फैसले का मुखर विरोध कर रहे हैं। कुछ संगठन तो इसी महीने 21 अगस्त को फैसले के विरोध में भारत बंद की अपील कर रहे हैं। ऐसे में अभी BJP और केंद्र सरकार अगले कुछ दिन फैसले के इर्द-गिर्द आ रही प्रतिक्रियाओं पर करीबी नजर रखेंगी और जल्दबाजी में अपने सियासी पत्ते नहीं खोलेंगी।

दरअसल, अलग-अलग कोटे में सब-कैटिगरी का मुद्दा हमेशा संजीदा और सियासी रूप से संवेदनशील रहा है। इसका सबसे बड़ा लाभ बिहार में नीतीश कुमार ने उठाया है। उन्होंने लालू प्रसाद यादव की पिछड़ों-दलितों की राजनीति में सेंध लगाते हुए महादलित राजनीति का रास्ता बनाया। यह दांव उनके लिए सियासी मास्टरस्ट्रोक साबित हुआ। उसी पैटर्न को पूरे देश में लागू करने की मंशा से नरेंद्र मोदी ने 2016 में OBC की कई जातियों की पुरानी मांग के मद्देनजर रोहिणी कमिशन का गठन किया था। इस कमिशन को OBC में जुड़ी जातियों और उप-जातियों की पहचान कर उन्हें अलग-अलग कैटिगरी में बांटना है। कमिशन का उद्देश्य OBC के बीच कमजोर जातियों को नौकरियों में अधिक मौके उपलब्ध कराना है। लेकिन कमिशन की रिपोर्ट आने में काफी वक्त लगा है, जबकि उसे 2018 में ही रिपोर्ट देनी थी। जानकार बताते हैं कि सरकार और BJP ने इसलिए अपने पैर पीछे खींच लिए थे क्योंकि उन्हें यह पहल दोधारी तलवार लगी। फिलहाल उस कमिशन की रिपोर्ट बनने के बाद उसे ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है।

विशुद्ध राजनीति

कसौटी

बढ़ेगा जाति जनगणना का दबाव

सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले के बाद केंद्र सरकार पर जाति जनगणना का दबाव और बढ़ेगा। तर्क दिया जा रहा है कि सब-कैटिगरी या क्रीमी लेयर के बारे में और स्पष्टता तभी आ सकती है जब सरकार के पास OBC और SC-ST आबादी का सामाजिक-आर्थिक आंकड़ा हो। यह आंकड़ा जाति जनगणना से ही आ सकता है। 2011 के बाद से देश में जनगणना नहीं हुई है। माना जा रहा है कि सरकार इस साल अक्टूबर में जनगणना की प्रक्रिया शुरू कर सकती है। लेकिन पहले से जाति जनगणना के दबाव और अब सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने सरकार की दुविधा बढ़ा दी है।

सुप्रीम कोर्ट के क्रीमी लेयर का मसला उठाने की वजह से भी सरकार की उलझन बढ़ी है। हालांकि राहत की बात यह है कि कोर्ट ने सरकार को इस मामले में कुछ करने का आदेश नहीं दिया है। लेकिन सवर्ण सहित कुछ ऐसे वर्गों हैं जो सरकार से इस पर कुछ निर्णायक पहल चाहते हैं। वे BJP के कोर समर्थक माने जाते रहे हैं। उनकी नाराजगी का असर पार्टी 2019 में SC-ST एक्ट में बदलाव के समय देख चुकी है जब उन्हें मनाने के लिए सवर्ण गरीब के लिए आरक्षण का प्रावधान लाया गया था। कुल मिलाकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद सियासत का एक और पिटारा खुल गया है।

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

hindi.speakingtree.in

अनुशासन की गली से गुज़रती है सफलता की राह

चेतनादित्य आलोक

सफलता की राह दिखाने में अनुशासन का बड़ा महत्व है। यह दो शब्दों अनु और शासन के मेल से बना है। इनमें 'अनु' उपसर्ग है, जो 'शासन' शब्द के साथ जुड़कर उसे 'अनुशासन' बनाता है। हालांकि मूल शब्द अनुशासन नहीं, बल्कि शासन है। देखा जाए तो शासन करना प्रत्येक व्यक्ति को अच्छा लगता है, लेकिन जब हम खुद पर शासन कर जीवन में संयम और संतुलन लाते हैं, तब वह अनुशासन बन जाता है। काम कोई भी हो, अनुशासन से परिणाम बेहतर मिलता है।

व्यक्ति समाज की इकाई होता है। एक व्यक्ति जब अनुशासन का पालन करता है, तो पूरे समाज में अनुशासन का वातावरण बनता है। तभी रिश्तों में मिठास, जीवन में समृद्धि और प्रसन्नता आती है। अनुशासित जीवन जीने से विचार और व्यवहारों से आने वाली नकारात्मकताएं धुल जाती हैं और व्यक्ति के अंदर सकारात्मकता का विकास होता है। जीवन के उज्ज्वल पक्ष को उजागर करने में सकारात्मक सोच का बड़ा महत्व है। अनुशासित व्यक्ति कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी ऊबता, डरता या टूटता नहीं, बल्कि उसके सामने दृढ़ता से खड़ा रहता है।

जीवन के तमाम झंझावातों से निपटने में अनुशासित व्यक्ति कारगर साबित हुआ है। लक्ष्यों को हासिल करने के लिए सही दिशा में निरंतर प्रयत्न करने और अवसरों का सही इस्तेमाल करने में अनुशासन सहायक होता है। हर व्यक्ति के अंदर प्रतिस्पर्धा की भावना होती है, चाहे वह स्तर कोई हो। स्पर्धा की राहों में धैर्य पूर्व आगे बढ़ने में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उनमें अनुशासन का बड़ा योगदान है। इसके अलावा जीवन की आध्यात्मिक उन्नति में अनुशासन का बेजोड़ महत्व है। इसलिए अनुशासन 'Gateway of Universal Success' कहा गया है। इन राहों से जो गुजरते हैं उनके लिए किसी भी कार्य क्षेत्र में सफलता की संभावना अधिक बढ़ जाती है। वहीं, अनुशासन के अभाव में व्यक्ति की सफलता में ग्रहण लग जाता है और सुख-शांति की संभावनाएं मलिन पड़ जाती हैं।

कई बार कुछ लोग लापरवाही भरा जीवन जीने में मजा पाते हैं। इसमें ज्यादा कुछ करना नहीं होता। लेकिन ऐसे लोगों के अंदर अनुशासन आ जाए, तो लापरवाही भी मिटने लगती है और तन-मन को तरोताजा करने में अनुशासन का बड़ा योगदान हो जाता है। जरा सोचिए कि अगर हमारे सैनिक पल भर के लिए भी अनुशासन को छोड़ दें, तो अंजाम क्या होगा? अगर वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, ड्राइवर, पायलट आदि कार्यों के प्रति अनुशासित रहने के बजाय स्वच्छंद हो जाएं तो क्या होगा? यह प्रकृति यदि पल भर के लिए भी स्वच्छंद हो जाए, यदि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमना छोड़ दे, सूरज हर दिन समय से उगना और अस्त होना छोड़ दे - सोचा है कभी कि क्या होगा इससे?

इस तरह से अनुशासन के बिना मनुष्य जीवन में तरक्की असंभव है। केवल जीवन और समाज ही नहीं, समस्त सृष्टि में कण-कण, तृण-तृण एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। तात्पर्य यह कि सृष्टि के समस्त कार्य-व्यापार अनुशासन की डोर से ही बंधे होते हैं।

रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

युद्ध थम जाए

5 अगस्त का संपादकीय 'युद्ध की आशंका' पढ़ा। ईरान और इस्राइल के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। संबंध सामान्य करने की दिशा में बढ़ रहे कदम भी अब ठिठक गए हैं। आशंका है कि दोनों मुल्क ऐसी जगह खड़े हैं, जहां अब हल्की-सी भी चिंगारी एक नई जंग की शुरुआत कर सकती है। युद्ध किसी मसले का हल नहीं बल्कि खुद ही एक मसला है। लेकिन हमास और हिजबुल्ला के प्रमुखों की मौत को ईरान पचा नहीं पा रहा। इसीलिए वह बार-बार दोहरा रहा है कि उसे जवाब देने का पूरा अधिकार है, वह बदला लेके रहेगा। लेकिन, जरूरत है कि कूटनीति और बातचीत के जरिये इस टकराव को रोक लिया जाए।

माम चंद सागर, ईमेल से

टेशन नहीं लेने का

यह पत्र 23 जुलाई को 'खाली-पीली' कॉलम में प्रकाशित लेख 'माइक्रोसॉफ्ट को 'माइक्रोहार्ड' बनाना मांगताए' से संबंधित है। लेखक राजनीति के प्रति उपहास और असंतोष व्यक्त करते हैं, क्योंकि वह मानते हैं कि सियासत में अक्सर अनावश्यक विवाद होते हैं। माइक्रोसॉफ्ट विंडोज की जगह माइक्रोहार्ड विंडोज का सुझाव दिया गया है। बाबूराव उन्हें एक मजेदार और हल्के-फुल्के तरीके से देखते हैं। इस हास्यपूर्ण लेख में तकनीकी समस्याओं का आसान उपाय सुझाने की कोशिश की गई है।

खाली पीली

प्रदीप ठाकुर, ईमेल से

जापान का सबक़

आज के ही दिन 1945 में अमेरिकी वायुसेना ने जापान के हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराकर हजारों लोगों को मौत की नींद सुला दिया था। विडंबना है कि हमने उस घटना से कोई सबक नहीं सीखा। दुनिया में परमाणु होड़ पहले से ज्यादा तेज है। इससे भी बड़ी चिंता की बात है कि पाकिस्तान जैसे अस्थिर देश के पास भी एटमी शक्ति है। अगर उसके परमाणु हथियार आतंकियों के हाथ लग गए तो पूरी दुनिया के लिए खतरा पैदा हो जाएगा।

राजेश कुमार चौहान, ईमेल से

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र

TMC ने अधिकारी को डॉटने वाले मंत्री से कहा इस्तीफा दें – एक खबर – हर समस्या का एक समाधान, इस्तीफा!

सुधीर गुप्ता

आर.एन.आई. नं. 210012/54 कार्यालय सूचना: निर्दिष्ट अनुसूची के नियम संख्या 14 अधीन पुस्तकालय पुष्टि: जीपीओ। जनसंपर्क मैनेजर, बोनाफाइड एवं कलरी विज्ञापन के लिए उपयोग पत्राचार आदि हेतु पता: 7, अमृतसर रायल भवन, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा **राहुल अमित हिंदुस्तान टाइम्स**, मयूर टावर, **ओखलिया क्षेत्र महारानीबाग** और फर्दर नंबर 2-6, सेक्टर 32-ए, इंस्टीट्यूट सेक्टर 62 नोएडा, कलिंग, हरियाणा से मुद्रित। संपादक - 2320000 फैक्स: 2340000 ई-मेल: [illegible]
- राहुल नीलेश देव, पृष्ठ-4000001 नियंत्रक होम यूनिट - 1 ए. टी. सी. कॉर्प. नेहरू के कुल यूनिट - सेक्टर 10 औद्योगिक - सेक्टर 5 ब. - हरियाणा - सेक्टर 5 ब.
संपादक / जिला संपादक: [illegible] पृष्ठ 2 अंक में प्रकाशित समाज सामग्रियों के भाग एवं संपादन हेतु वी.आर.बी. एक्ट के अध्यक्ष उत्तरदायी।

अपने धन पर स्वयं का नियंत्रण रखें, अन्यथा इसकी कमी हमेशा आप पर हावी रहेगी। -डेव रैमसे

बांग्लादेश में आरक्षण विरोध के नाम पर शुरू हुए आंदोलन की परिणति जिस अराजक ढंग से तख्तापलट में हुई है, और शेख हसीना को मुल्क छोड़ना पड़ा, उससे यही पता चलता है कि वहां फौज व कट्टरपंथी ताकतें आज भी मजबूत हैं। देखना होगा कि पड़ोसी मुल्क कैसे शांति व स्थिरता की राह पर लौटता है।

बांग्लादेश में तख्तापलट

बांग्लादेश में पिछले कुछ महीनों से चल रहे आरक्षण विरोधी आंदोलन ने जिस तरह से अराजक व हिंसक रूप ले लिया, और जिन हालात में प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देकर देश छोड़कर भागना पड़ा तथा सेना द्वारा शीघ्र ही अंतरिम सरकार के गठन की घोषणा की गई, उससे तो यही लगता है कि देश में लंबे समय तक अस्थिरता बनी रह सकती है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2022 में एक अन्य पड़ोसी देश श्रीलंका में भी कुछ ऐसी ही स्थिति बनी थी, जब वहां आर्थिक संकट के बाद राष्ट्रपति राजपक्षे की सरकार के खिलाफ जनता सड़कों पर उतर आई थी और राष्ट्रपति भवन तक में घुस गई थी। राजधानी ढाका की स्थिति इससे ही समझी जा सकती है कि अब तक करीब चार लाख से ज्यादा लोग सड़कों पर उतर आए हैं। यही नहीं, प्रदर्शनकारी जिस तरह से प्रधानमंत्री आवास में घुसकर अराजकता फैला रहे हैं, वह अव्यवस्था का अंदाजा लगाने के लिए पर्याप्त है। उल्लेखनीय है कि बांग्लादेश में सड़कों पर आंदोलन और राजनीतिक हिंसा कोई नई बात नहीं है। 1975 में शेख हसीना के पिता शेख मुजीबुर रहमान की हत्या और तख्तापलट के बाद 15 साल तक वहां सैन्य शासन रहा और अब एक बार फिर बांग्लादेश में वैसी ही स्थितियां बन गई हैं। अफसोस की बात है कि 1990 में लोकतंत्र की स्थापना के बावजूद वहां कट्टरपंथी ताकतों ने लोकतंत्र की जड़ों को कभी मजबूती से पनपने ही नहीं दिया। शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग और खालिदा जिया के नेतृत्व वाली कट्टरपंथी बीएनपी के बीच राजनीतिक उठापटक चलती रही, जिसका नतीजा यह रहा कि देश हमेशा असल मुद्दों से भटकता नजर आया। हालांकि शेख हसीना के कार्यकाल में देश की आर्थिक तरक्की होने के साथ उसकी अंतरराष्ट्रीय छवि भी बेहतर हुई। यही नहीं, खालिदा जिया के कार्यकाल में उभरे कट्टरपंथ से जूझते हुए शेख हसीना ने भारत के साथ दोस्ती बनाए रखी, तो चीन से निवेश लाने में भी कामयाबी हासिल की। आरक्षण को लेकर चला आंदोलन बांग्लादेश में कट्टरपंथी ताकतों को, जिन्हें अंदर और बाहर, दोनों जगह से समर्थन मिल रहा है, नई ताकत देने का बहाना बना है। फिलहाल वहां जो अराजकता दिख रही है, उसमें भारत के लिए प्राथमिकता अपने लोगों और राजनयिकों की सुरक्षा होनी ही चाहिए। सेना द्वारा गठित अंतरिम सरकार से ज्यादा उम्मीदें लगाने का कोई मतलब नहीं दिखता। ऐसे में देखना होगा कि पड़ोसी मुल्क कैसे शांति व स्थिरता की राह पर लौटता है।

यह भारत का समय है

विदेशी सहायता के मामले में चीन और भारत के दृष्टिकोण में बहुत फर्क है। चीन बड़ी परियोजनाओं की फंडिंग करता है, जबकि भारत छोटी परियोजनाओं को वित्तपोषित करता है। वैश्विक आर्थिक प्रतिकूलताएं चीन के लिए बाधा बन रही हैं, ऐसे में पूरी दुनिया का मानना है कि यह भारत का समय है।

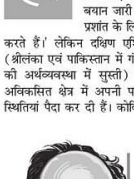

जितेंद्र उत्तम
प्रोफेसर, पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र, जेएनयू

हाल ही में टोक्यो में हुई क्वाड देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में चीन को स्पष्ट संदेश देते हुए कहा गया कि हिंद-प्रशांत देश में किसी की दबंगई स्वीकार नहीं की जाएगी। क्वाड के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त बयान जारी कर कहा, 'हम स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत के लिए 'क्वाड' की दृढ़ प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं।' लेकिन दक्षिण एशिया में हालिया आर्थिक उथल-पुथल (श्रीलंका एवं पाकिस्तान में गंभीर आर्थिक संकट के साथ बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था में सुस्ती) ने बीजिंग के लिए इस विशाल एवं अविकसित क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए अनुकूल स्थितियां पैदा कर दी हैं। कोविड काल के दौरान दुनिया भर में बड़े पैमाने पर तरलता के प्रवाह ने मुद्रास्फीति के माहौल को जन्म दिया, जिससे अमेरिकी डॉलर का मूल्य बढ़ गया। मजबूत अमेरिकी मुद्रा ने कई दक्षिणी एशियाई देशों को आर्थिक संकट में डाल दिया।

इससे श्रीलंका और पाकिस्तान में भारी आर्थिक संकट पैदा हो गया। इन देशों की आर्थिक कमजोरियों पर नजर रखने वाला चीन दक्षिण एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए सैन्य, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक साधनों का उपयोग करने पर तुला है। बीजिंग का लक्ष्य प्रमुख एशियाई शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करना, हिंद महासागर के विशाल संसाधनों तक पहुंच बनाना, भारत को घेरना, महत्वपूर्ण समुद्री संचार लाइनों को सुरक्षित करना तथा हिंजियांग व तिब्बत जैसे अस्थिर क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। भारत और भूटान को छोड़कर इस क्षेत्र के अधिकांश देश बेल्ट ऐंड रोड इनीशिएटिव (बीआरआई) में शामिल हैं।

चीन इस क्षेत्र के कई देशों की बड़ी आधारभूत परियोजनाओं के निर्माण में मदद कर रहा है, और इसके लिए उसने उन देशों को कर्ज दिया है। ये कर्ज चीन के रणनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं और इस क्षेत्र में उसका प्रभाव बढ़ाने में मदद करते हैं। क्या बीजिंग भारत को घेरने के लिए गठबंधनों का जाल बुन रहा है?

कैलिफोर्निया स्थित आरएएनडी कॉर्पोरेशन के वरिष्ठ रक्षा विश्लेषक प्रोफेसर डेरेक ग्रासमैन का मानना है कि 'भारत दक्षिण एशिया में चीन से आर्थिक प्रतिस्पर्धा में हार नहीं रहा, बल्कि जीत भी सकता है।' खबरों से पता चलता है कि भारत दक्षिण एशिया के पसंदीदा ऋणदाता के रूप में चीन को चुनौती देने की योजना बना रहा है और उसके बीआरआई के पीछे छिपे इरादे का मुकाबला करना चाहता है। श्रीलंका और पाकिस्तान की आर्थिक विफलता के बाद, नई दिल्ली ने पड़ोसी देशों को ऋण देने में भारी वृद्धि करने के अपने प्रयासों को तेज कर दिया है। दक्षिण एशियाई समकक्षों को वैकल्पिक ऋण सुविधा प्रदान करने वाले देश के रूप में भारत के उभार के कारण अरबों डॉलर के निवेश वाली बड़ी आधारभूत परियोजनाओं की फंडिंग करने में चीन की रुचि कम हो रही है।

आंकड़ों से पता चलता है कि एक ऋणदाता के रूप में भारत की भूमिका में बहुत तेजी से बढ़ी है। वर्ष 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से भारत सरकार की ऋण सहायता का मूल्य लगभग तीन गुना बढ़कर 32.5 अरब डॉलर हो गया है। हालांकि भारत इस मामले में चीन से बहुत पीछे है, लेकिन आजादी के बाद से इसकी विदेशी सहायता 55 अरब डॉलर से दोगुनी होकर 107 अरब डॉलर हो गई है। भारतीय विदेश मंत्रालय का कहना है कि भारत ने लगभग 600 परियोजनाओं के लिए 300 से अधिक क्रेडिट लाइनें बढ़ाई हैं। भारत द्वारा वित्तपोषित छोटी परियोजनाओं में व्यापक सामाजिक भागीदारी और बड़ी राजनीतिक पहुंच है।

विदेशी सहायता के मामले में चीन और भारत के दृष्टिकोण में बहुत अंतर है। चीन बड़ी-बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की फंडिंग करता है, जबकि भारत क्रेडिट लाइनों पर ध्यान केंद्रित करता है, ताकि जरूरत के हिसाब से छोटी-छोटी परियोजनाओं को वित्तपोषित किया जा सके, जो स्थानीय आबादी के लिए मददगार और गरीबी उन्मूलन में सहायक हो सकती हैं। भारत में कई लोगों का मानना है कि चीन ऋण-जाल कूटनीति अपना रहा है, जो दूसरों की संपत्तियों पर नियंत्रण के उद्देश्य से कर्ज देता है।

नई दिल्ली द्वारा ऋण की नरम शर्तों और आवश्यकता-आधारित छोटी क्रेडिट लाइनों ने भारत के प्रति सद्भावना पैदा की है। नतीजतन नई दिल्ली को श्रीलंका के उत्तरी भाग में कुछ ऊर्जा परियोजनाएं मिलीं, जो पहले चीनी डेवलपर के पास थीं। फिर भी, दक्षिण एशिया में कई देश भारत को चीनी ऋण का प्रभावी विकल्प नहीं मानते हैं। मसलन, मालदीव के विपक्ष ने इंडिया आउट कैंपेन चलाया और कहा कि भारत द्वारा वित्तपोषित परियोजनाएं द्वीपसमूह में अपनी सैन्य पैठ से ध्यान हटाने के लिए हैं।

विदेशी सहायता में निजी कंपनियों को भागीदार बनाने के लिए मोदी सरकार ने 2015 में विदेश में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए रियायती ऋण देने की योजना शुरू की। भारत के एक्जिम बैंक के ऋण में चीनी ऋणों की तुलना में अधिक रियायती शर्तें होती हैं। प्रधानमंत्री मोदी भारत के हर उस कारोबारी घराने के करीब रहे हैं, जो विकासोन्मुख व राष्ट्रवादी है और बड़ा दांव लगाने को तैयार है। इनमें वे भारतीय कंपनियां भी शामिल हैं, जिन्होंने विदेशों में महत्वपूर्ण कारोबार स्थापित किया है।

दक्षिण एशियाई अर्थव्यवस्थाओं पर चीन की लगातार बढ़ती छाया के बावजूद भारत का पड़ोसी देशों पर प्रभाव बना हुआ है। क्षेत्र के कई देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक और भाषायी संबंध हैं, जिससे लगता है कि दक्षिण एशिया पर चीन के प्रभाव की सीमाएं हैं। सुस्त आर्थिक वृद्धि और महाशक्तियों के बीच बढ़ती प्रतिद्वंद्विता के कारण चीन को दक्षिण एशिया में अपनी पहुंच बढ़ाने में बाधाओं का एहसास हो रहा है। भारत पड़ोसी देशों में अपना खोया हुआ गौरव फिर से हासिल करने के लिए उपयुक्त मौके तलाश रहा है। वैश्विक आर्थिक प्रतिकूलताएं चीन के राजनीतिक-आर्थिक प्रभाव के लिए बाधा बन रही हैं, ऐसे में पूरी दुनिया कहती है कि यह भारत का समय है।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

जीन जैक्स रोसेऊ

यह संसार बहुत सुंदर है, लेकिन मनुष्य के हाथों में आते ही सबकुछ बिगड़ जाता है। इस संसार में जब कोई केवल जीविकोपार्जन के बारे में सोचता है, तो उसके लिए महान सोचना बहुत कठिन हो जाता है।

वास्तविकता की सीमा होती है, कल्पना असीम है

जीवन जीने का मतलब सिर्फ सांस लेना नहीं, बल्कि काम करना है। इसका सही मतलब है अपने अंगों, अपनी इंद्रियों, अपनी क्षमताओं, अपने सभी अंगों का इस्तेमाल करना, जो हमें हमारे अस्तित्व की भावना देते हैं। सबसे ज्यादा जीने वाला व्यक्ति वह नहीं है, जिसने सबसे ज्यादा साल गिने हैं, बल्कि वह है जिसने जीवन को सबसे ज्यादा महसूस किया है। हमें अपने दिल की भावनाओं को जानना होगा। हमें उन लोगों की तरह नहीं बनना चाहिए, जिन्हें हमने देखा है। अगर हम बेहतर नहीं हैं, तो कम से कम अलग जरूर हैं। प्रकृति ने हमें जिस सांचे में ढाला है, उसे नष्ट करके हमने गलत काम किया है, इसका फैसला मुझे पढ़ने के बाद ही हो सकता है। जो लोग कम जानते हैं, वे आमतौर पर बहुत बातूनी होते हैं, जबकि जो लोग बहुत जानते हैं, वे कम बोलते हैं। इस वास्तविकता की दुनिया की अपनी सीमाएं हैं, कल्पना की दुनिया असीम है। प्रकृति ने हमें खुश और अच्छा बनाया है, और अगर हम ऐसे नहीं हैं, तो यह समाज की गलती है। हर व्यक्ति स्वतंत्र पैदा होता है और खुद का स्वामी होता है, जो लोग खुद को दूसरों का मालिक समझते हैं, वास्तव में वे उनसे भी बड़े गुलाम हैं। यह संसार बहुत सुंदर है, लेकिन मनुष्य के हाथों में आते ही सबकुछ बिगड़ जाता है। इस संसार में जब कोई केवल जीविकोपार्जन के बारे में सोचता है, तो उसके लिए महान चीजों के बारे में सोचना बहुत कठिन हो जाता है। इस धरती पर सब कुछ निरंतर परिवर्तनशील है। कोई भी चीज हमेशा एक जैसी नहीं रहती और हमारे स्नेह, हमारे बाहर की चीजों से जुड़े होने के कारण, अनिवार्य रूप से बदलते हैं और समाप्त हो जाते हैं। हमारे सांसारिक आनंद लगभग बिना किसी अपवाद के क्षणिक होते हैं। जो लोग वादा करने में सुस्त होते हैं, वे उसे निभाने में सबसे अधिक वफादार होते हैं। वास्तविक ज्ञान हर चीज का ज्ञान होना नहीं है, बल्कि यह जानना है कि जीवन में कौन-सी चीजें जरूरी है, कौन-सी चीजें कम जरूरी हैं और कौन-सी चीजें जानना पूरी तरह से अनावश्यक हैं। सबसे जरूरी ज्ञान यह है कि कैसे अच्छी तरह से जिया जाए, यानी अपने जीवन में कम से कम बुराई और ज्यादा अच्छाई कैसे पैदा की जाए। आजकल लोग बेकार के विज्ञान पढ़ते हैं, और सबसे जरूरी ज्ञान का अध्ययन करना भूल जाते हैं। मिलनसार व्यक्ति अपने से बाहर रहता है, वह केवल दूसरों की राय में ही जीना जानता है, यों कहें कि केवल उनके निर्णय से ही वह अपने अस्तित्व का बोध प्राप्त करता है। हम कमजोर पैदा होते हैं, हमें ताकत की जरूरत होती है, असहाय होने पर हमें सहायता की जरूरत होती है। मूर्ख होने पर हमें तर्क की जरूरत होती है।

गतिशील होना पड़ेगा

सूत्र

हमें गतिशील होना पड़ेगा, क्योंकि जब हम एक स्थान पर टिके होते हैं, तो मुश्किल से ही हम कुछ नया सोच पाते हैं। दिमाग को गतिशील रखने के लिए शरीर को गतिशील रखना पड़ता है। उन लोगों को ध्यान से सीखना चाहिए कि बहुत सारा शृंगार केवल दोषों को छिपाने के लिए किया जाता है, और असल सुंदरता की जीत स्वयं चमकने में ही है।

दूसरा पहलू

समुद्री पौधों में फूल, बीज और भूमिगत जड़ें होती हैं। समुद्री घास में जीवों की हलचल से संकेत मिलता है कि यहां जैव-विविधता काफी ज्यादा है।

समुद्री घास से आती आवाजें बहुत कुछ बताती हैं

स्कॉटलैंड का पश्चिमी समुद्री तट धूप में बहुत ही सुंदर दिखता है। यह समुद्र फिलहाल शांत है, लेकिन जुलाई में भी यहां तापमान 12 डिग्री रहता है। ध्वनि रिकॉर्डिंग उपकरणों के साथ मैं तीन अलग-अलग स्कॉटिश समुद्री घास के मैदानों में रहने वाले जीवों की आवाजें सुन रही हूं। समुद्री पारिस्थितिकी में डॉक्टरेट करने के लिए मैं समुद्री घास के मैदानों की जैव विविधता की जांच कर रही हूं। शैवालों से अलग इन समुद्री पौधों में फूल, बीज, पराग और भूमिगत जड़ें होती हैं। समुद्री घास के मैदानों में जीवों की हलचल से इसका संकेत मिलता है कि यहां जैव-विविधता काफी ज्यादा है।

ईसावेल की

खेती, तटीय विकास और मछलियां पकड़ने के विनाशकारी तरीकों की वजह से समुद्री घास के मैदान कम होते जा रहे हैं। 1990 के बाद से तो इसमें सात फीसदी सालाना की दर से कमी आ रही है। समुद्री घास मछलियों के लिए महत्वपूर्ण प्रजनन स्थल है और पानी की गुणवत्ता में सुधार करती है तथा कार्बन भंडार का काम करती है। इसलिए समुद्री घास के इलाके में कमी का असर उसमें रहने वाले जीवों और समुद्री पर्यावरण पर काफी पड़ता है। समुद्री घास में ध्वनियों को रिकॉर्ड करने से ऐसे जीवों का पता लग सकता है, जिन्हें हम देख नहीं सकते। मैं माइक्रोफोन के पास पानी में एक वीडियो कैमरा भी लगा देती हूं, जिससे यह पता चलता है कि कौन-सी ध्वनि किस जीव की है। अब तक मैंने 14 अलग-अलग तरह की आवाजों की पहचान की है।

समुद्री घास मछलियों के लिए महत्वपूर्ण प्रजनन स्थल हैं और पानी की गुणवत्ता में सुधार करती हैं तथा कार्बन भंडार का काम करती हैं।

मछलियां धीमी गति से गुर्राती, डकार लेती या म्याऊं जैसी आवाजें निकालती हैं। केकड़े किसी धातु को खुरचने जैसी आवाज निकालते हैं। दिन के वक्त में अक्सर किसी चीज के फटने या बुलबुलों जैसी आवाजें सुनाई देती हैं।

मैंने पाया कि कुछ ध्वनियां रेतीले आवास की तुलना में समुद्री घास में ज्यादा सामान्य होती हैं। मछलियां धीमी गति से गुर्राती, डकार लेती या म्याऊं जैसी आवाजें निकालती हैं। केकड़े किसी धातु को खुरचने जैसी आवाज निकालते हैं। दिन के वक्त में अक्सर किसी चीज के फटने या बुलबुलों जैसी आवाजें सुनाई देती हैं। यह समझ पाना मुश्किल है कि कौन-सा जानवर कौन-सी ध्वनि निकाल रहा है, खासतौर से जब महासागरों में शोर बहुत बढ़ गया है। यह ध्वनि प्रदूषण समुद्री जीवों के लिए भी गंभीर समस्या बन रहा है, जो अपने अस्तित्व के लिए ध्वनि पर ही निर्भर रहते हैं। मगर समुद्री घास पानी के भीतर ध्वनि तरंगों को भी अवशोषित करके उसके प्रदूषण को रोक सकती है और यहां तक कि मछलियों को डॉल्फिन से भी बचा सकती है। उम्मीद यह है कि मेरे इस शोध का उपयोग मशीन-लर्निंग एल्गोरिदम को प्रशिक्षित करने और समुद्री घास व अन्य समुद्री आवासों में जैव विविधता की निगरानी के लिए आसान उपकरण बनाने में किया जा सकता है। *(द कन्वर्सेशन)*

आंकड़े

पेट्रोल-डीजल

भारत दुनिया की एकमात्र ऐसी बड़ी अर्थव्यवस्था है, जहां हाल के वर्षों में पेट्रोल और डीजल की कीमतें घटी है, जबकि अन्य देशों में बढ़ी हैं।

फ्रांस	22.19%
कनाडा	22.07%
अमेरिका	19.08%
स्पेन	16.58%
इटली	14.82

आंकड़े 2021 से 2024 का भारत में तेल की कीमतें 13.65% घटी हैं। स्रोत : PPAC

देवताओं को दैत्यों पर जीत दिलाने के बाद खटवांग जब पृथ्वी पर लौटने लगे, तो देवताओं ने उनसे कुछ मांगने के लिए कहा। उन्होंने अपनी शेष आयु के बारे में पूछा।

दो क्षण बचा था जीवन

अंतर्यात्रा
संकलित

सगरवंशीय राजा विश्वसह के पराक्रमी पुत्र का नाम खटवांग था, जो दिलीप के नाम से भी प्रसिद्ध हुए। वह चक्रवर्ती सम्राट थे। उन दिनों देवासुर संग्राम काफी होता था। राजा दिलीप ने अपने आश्रितों की रक्षा करने का प्रण ले रखा था। एक बार वह देवताओं की प्रार्थना से दैत्यों पर विजय प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में गए थे। संग्राम में देवताओं को जीत दिलाने के बाद खटवांग पृथ्वी पर लौटने लगे, तो देवताओं ने उनसे आग्रह किया कि हमारी अभिलाषा है कि आपको कुछ दें। हम आपको कुछ भी दे सकते हैं।

देवों की बात सुनकर दिलीप ने सोचा कि देवता लौकिक और पारलौकिक सुख ही दे सकते हैं, मोक्ष की शक्ति इनके पास है नहीं। उन्होंने विचार कर देवताओं से पूछा कि कृपा कर बताएं, 'हमारी आयु कितनी बची है।' देवताओं ने उन्हें बताया कि आपकी आयु एक मुहूर्त अर्थात दो घड़ी ही शेष है। यह सुनकर दिलीप ने कहा कि जब जीवन दो घड़ी ही बचा है, तो इतने अल्प समय में हम भोगों का वरदान लेकर क्या करेंगे। इसलिए उन्होंने कहा, 'कृपा कर मुझे जल्द भारत भूमि पर पहुंचाएं, ताकि दो घड़ी तो भगवान का ध्यान कर सकूं।' ऐसा ही हुआ। वह पृथ्वी पर आए और भगवान का ध्यान कर भाव समाधि में लीन हो गए। नाम जप करते हुए उन्होंने अपनी देह त्याग दी। उन्होंने अपना पूरा जीवन परोपकार और भगवान की भक्ति में बिताया था।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 02 फरवरी, 1957

संयुक्त राष्ट्र सेना भेजने की योजना को ठुकरा देगा भारत

संयुक्त राष्ट्र सेना भेजने की योजना को भारत तुरन्त ठुकरा देगा

नई दिल्ली, 1 फरवरी। सरकारी सूत्रों से पता चला है कि यदि सुरक्षा परिषद ने कश्मीर के लिए संयुक्त राष्ट्र सेना भेजने की कोई योजना तैयार की, तो भारत तुरंत उसे ठुकरा देगा। ऐसी सेना भेजने का प्रस्ताव कोई नया नहीं है।

सुरक्षा मानों की धमकी नहीं दी जो वह इस्ता उस देश पर का सकता

पूना, 1 फरवरी। प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने आज यहां पत्रकार परिषद में कहा कि कश्मीर के मामले में भारत पर संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से कोई दबाव नहीं डाला जा सकता। उन्होंने कहा कि भारत पर किसी प्रकार की धमकी नहीं दी जा सकती।

विदेशी का उत्तरदेश में कोई का सम्बन्ध अतीत का बताया गया है।

सरकारी क्षेत्रों में यह बात कही जा रही है कि यदि सुरक्षा परिषद ने कश्मीर के लिए संयुक्त राष्ट्र सेना भेजने की कोई योजना तैयार की, तो भारत तुरंत उसे ठुकरा देगा। ऐसी सेना भेजने का प्रस्ताव कोई नया नहीं है।

आसान नहीं विकसित राष्ट्र की डगर

विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लिए लगातार 7 से 10 फीसदी की विकास दर चाहिए।

जयंतीलाल भंडारी — **लक्ष्य**

विश्व बैंक ने अपनी ताजा रिपोर्ट में कहा है कि भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने का संकल्प चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए भारत को मध्य आय के जाल से निकलना होगा और लगातार 7 से 10 फीसदी की विकास दर से वृद्धि करनी होगी। मौजूदा विकास दर की रफ्तार से अमेरिका के चौथाई जीडीपी तक पहुंचने में भारत को 75 साल लग जाएंगे।

इन दिनों भारत को विकसित बनाने पर मंथन चल रहा है। 27 जुलाई को नीति आयोग के शासी निकाय की बैठक में भी इस रणनीति पर विचार-विमर्श हुआ। वहीं 30 जुलाई को लोकसभा में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट पर चर्चा के जवाब में कहा कि यह बजट विकसित भारत के लिए है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय उद्योग परिसंघ के सम्मेलन में कहा था कि अब विकसित भारत के लिए उद्योगों की अहम भूमिका है। ऐसे में अब सरकार से विकसित भारत के स्पष्ट रोडमैप की अपेक्षा की जा रही है। नीति आयोग की बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि विकसित देश बनाने के लिए कई अनुकूलताएं भारत के पास हैं। चूंकि यह दशक तकनीक और भू-राजनीतिक बदलाव का है, अतएव भारत को इस मौके का पूरा फायदा उठाना होगा और ऐसी नीतियां बनानी होंगी, जिससे ज्यादा से ज्यादा विदेशी निवेश भारत में आए। प्रधानमंत्री ने गांवों से गरीबी खत्म करने का लक्ष्य तय करने और जिलों को विकास के वाहक बनाने का आह्वान किया है।

नीति आयोग के दृष्टिपत्र में कहा गया है कि 'जनसांख्यिकी, लोकतंत्र और विविधता' के तीन स्तंभों पर विकसित भारत बनाने का लक्ष्य रखा गया है। कहा गया है कि पिछले 70 वर्षों में मुश्किल से एक दर्जन मध्यम आय वाले देश ही उच्च आय वाले विकसित देश बन पाए हैं। ऐसे में कई बड़े लक्ष्य की चुनौतियों के बीच भारत को विकसित देश बनाने की डगर पर आगे बढ़ा जाएगा। भारत को एक विकसित देश बनने के लिए 18,000 अमेरिकी डॉलर की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय के साथ 2047 तक करीब 30 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आवश्यकता है। विकसित भारत के लिए देश में प्रत्येक नागरिक के पास गुणवत्तापूर्ण आवास, 24 घंटे शुद्ध पेयजल और बिजली आपूर्ति, हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड और बैंकिंग सुविधाओं सहित उच्च गुणवत्ता वाली सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच जरूरी होगी। इसमें कोई दो मत नहीं है कि विकसित भारत के सपने को पूरा करने के लिए वर्ष 2024-25 का आम बजट महत्वपूर्ण है। वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों मूडीज, एसएंडपी, फिच आदि ने वित्त वर्ष 2024-25 के भारत के बजट की सराहना करते हुए कहा कि इस बजट में राजस्व घाटा एवं राजकोषीय घाटा कम करने की प्रतिबद्धता दिखाई गई है।

अगले 23 वर्षों में भारत को विकसित बनाने का लक्ष्य चुनौतीपूर्ण है, लेकिन असंभव नहीं है। 2047 तक 18,000 डॉलर वार्षिक प्रति व्यक्ति आय के लक्ष्य को हकीकत में बदलने के लिए दो अंकों की वृद्धि लगातार बरकरार रखनी होगी। इस परिप्रेक्ष्य में हम दुनिया के कई देशों को सामने रख सकते हैं। सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, जापान, जर्मनी जैसे देशों ने दशकों तक ऊंची विकास दर से विकसित देश के तमगे हासिल किए गए हैं। इन देशों के विकसित देश बनने में संस्थागत और सामाजिक बदलावों से भी बड़ी मदद मिली है। सिंगापुर ने अफसरशाही में सुधार किया, कोरिया ने अभिनव निजी-सार्वजनिक भागीदारी विकसित की है, तो जापान ने अपने सार्वजनिक क्षेत्र में नियमन और न्यायपालिका में पूरी तरह पश्चिमी उदारवादी मॉडल अपनाने की रणनीति अपनाई।

भारत को भी ऐसे संस्थागत और सामाजिक बदलाव के आधार पर उच्च वृद्धि हासिल करनी होगी, देश में ऊर्जा क्षेत्र की मुश्किलें दूर करनी होंगी। औद्योगिक प्रतिस्पर्धा बढ़ानी होगी। ग्रामीण व शहरी असमानता दूर करनी होगी। इन सबके साथ-साथ इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि देश में इस समय जिस तरह पुरातन व्यवस्थाओं और सख्त अफसरशाही ढांचे की वजह से निर्णय प्रक्रिया में देरी होती है, उसमें व्यापक सुधार लाया जाए। विकसित भारत के लिए जरूरी होगा कि कृषि के अतिरिक्त श्रम बल के लिए उद्योग और सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजित किए जाएं। देश में न्यायिक प्रक्रिया और कानून के प्रवर्तन में सुधार और सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करनी होगी। महिलाओं को श्रम शक्ति में अधिक भागीदारी देने और अन्य सामाजिक बदलावों को लागू करने जैसे अभियानों के लिए प्रबल राजनीतिक और सामाजिक सहमति बनानी होगी। हम उम्मीद करें कि सरकार 2047 तक देश को विकसित देश बनाने के संकल्प के मद्देनजर अधिक स्पष्ट रोडमैप के साथ कदम आगे बढ़ाएगी और देशवासी भी अपना हरसंभव योगदान देते हुए दिखाई देंगे।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 147

बांग्लादेश पर संकट के बादल

तेजी से बदलते घटनाक्रम के बीच बांग्लादेश विकट स्थिति में फंस गया है। कभी आर्थिक मोर्चे पर दमदार प्रगति कर दुनिया को चौंकाने वाला यह देश पिछले एक महीने से चल रहे विरोध प्रदर्शन के बाद विपरीत हालात से जूझ रहा है। ऐसी खबरें हैं कि बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना इस्तीफा देने के बाद देश छोड़कर भारत पहुंच गई हैं। हसीना ने प्रधानमंत्री के रूप में बांग्लादेश में सबसे अधिक अवधि तक शासन किया है। उनके कार्यकाल में बांग्लादेश 2026 तक मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्था बनने की तरफ अग्रसर था। वर्तमान संकट का तात्कालिक कारण वहां छात्रों का विरोध प्रदर्शन है। छात्र सरकारी नौकरियों में आरक्षण का विरोध कर रहे हैं, जो हिंसा का रूप ले चुका है। इसमें जुलाई से 300 लोगों की जान जा चुकी है। यह विरोध प्रदर्शन बांग्लादेश की राजनीतिक-आर्थिक अर्थव्यवस्था में आई दो प्रमुख कमजोरी का लक्षण है। वहां राजनीतिक संस्थाएं कमजोर हो चुकी हैं और आर्थिक बुनियाद में भी दरारें दिखने लगी हैं।

इन दोनों कारणों से बांग्लादेश में शेख हसीना की लोकप्रियता को चोट पहुंची। हसीना इस वर्ष जनवरी में चुनाव जीतने के बाद लगातार चौथी बार प्रधानमंत्री बनी थीं, मगर उन्हें लेकर वहां असंतोष भी साफ दिख रहा था। हसीना का रवैया सत्तावादी रहा था और उनकी सरकार के आलोचकों के प्रति उनका व्यवहार सख्त था। परंतु, बांग्लादेश के तेज आर्थिक विकास के बीच इन बातों की अनदेखी हो गई। वस्त्र उद्योग, विशेषकर, तैयार परिधानों के निर्यात में बांग्लादेश का प्रदर्शन सराहनीय रहा है। इस उद्योग के दम पर वहां 2.5 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकल पाए और महिलाओं के सशक्तीकरण में भी बहुत मदद मिली है। बांग्लादेश में प्रति व्यक्ति आय पिछले कुछ वर्षों में भारत से भी अधिक अधिक थी और दक्षिण एशिया में कई मानव सूचकांकों पर इसका प्रदर्शन शानदार रहा था।

हालांकि, कोविड-19 महामारी के बाद वैश्विक स्तर पर मांग कमजोर होने के बाद बांग्लादेश में परिस्थितियां बिगड़ने लगी थीं। वहां सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर सुस्त पड़ने लगी और भुगतान संकट बिगड़ता चला गया। पिछले वर्ष इस देश को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से सहायता लेनी पड़ी।

कोविड पूर्व दर्ज आर्थिक वृद्धि और रोजगार के अवसर तैयार करने के लिए बांग्लादेश में निजी निवेश का दायरा वस्त्र निर्यात से आगे ले जाने की आवश्यकता स्पष्ट रूप से महसूस की जा रही है। परंतु, ऐसा कर पाने में देश संघर्ष करता दिखा। निजी निवेश सीमित रहने से सरकारी नौकरियों पर वहां के युवाओं की निर्भरता बढ़ने लगी। ऐसे आरोप लगते रहे कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ सत्ताधारी अवामी लीग से संबद्ध लोगों को मिलते रहे। बांग्लादेश में नौकरियों में आरक्षण के खिलाफ उच्चतम न्यायालय का निर्णय देर से आया और इस बीच परिस्थितियां वहां बेकाबू हो गईं। सरकार के खिलाफ वहां के लोगों के विरोध प्रदर्शन की जड़ें हसीना के सत्तावादी शासन से जुड़ी थीं। जब वह चौथी बार चुनाव जीतीं तो यह बात साफ दिख रही थी। चुनाव से पहले विपक्षी नेताओं के खिलाफ सख्त मुहिम चलाई गई और मुख्य विपक्षी दल बांग्लादेश नैशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने चुनाव का बहिष्कार कर दिया। चुनाव में मात्र 40 प्रतिशत मतदाता मतदान करने आए और धांधली के आरोप भी लगे।

बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर्रहमान की पुत्री शेख हसीना अपना देश छोड़कर भारत पहुंच गई हैं। इस पूरी घटना को भारत की किसी तरह की भूमिका से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। दक्षिण एशिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बांग्लादेश इस क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। अपने विभिन्न कार्यकालों में हसीना का भारत के प्रति मित्रवत व्यवहार रहा है। उन्होंने इस्लामी उग्रवादियों का पता लगाने एवं समाप्त करने में भारत की सहायता की और सीमा विवाद भी सुलझाने में प्रमुख भूमिका निभाई। हसीना भारत विरोध के स्वरों को दबाने में भी आगे रहीं। बांग्लादेश के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित एवं शेख हसीना के आलोचक मोहम्मद यूनुस ने भारत से ढाका में चल रहे घटनाक्रम से दूरी बरतने की नीति छोड़ने का आग्रह किया है। परंतु, बांग्लादेश की राजनीति और वहां सेना की भूमिका का एक विशेष इतिहास रहा है। वहां वर्ष 1975 से सेना राजनीतिक नेतृत्व के खिलाफ 29 बार विद्रोह कर चुकी है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए भारत के लिए फिलहाल इंतजार करना ही समझदारी वाला कदम होगा।

डेरिवेटिव कारोबार पर नियंत्रण और अर्थव्यवस्था पर असर

भारत में डेरिवेटिव बाजार के विकास की समीक्षा और जोखिम प्रबंधन से मिलने वाले लाभ के आकलन के बाद डेरिवेटिव योजनाओं पर नीति तैयार की जानी चाहिए। बता रहे हैं के पी कृष्णन

आधुनिक एवं सक्षम बाजार अर्थव्यवस्था में मूल्य में होने वाले बदलाव की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। कीमतों में उतार-चढ़ाव के बीच मिलने वाले संकेतों से मांग एवं आपूर्ति के मोर्चों पर हरकत होने लगती है। ये उतार-चढ़ाव दीर्घ अवधि में असहज एवं नुकसानदेह हो सकते हैं। मगर वित्तीय डेरिवेटिव बाजार ऐसे माध्यम तैयार करते हैं जिनका सहारा लेकर कुछ निश्चित भुगतान करने के बदले लघु एवं मध्यम अवधि में कीमतों में उतार-चढ़ाव के प्रतिकूल असर से बचा जा सकता है।

वित्तीय डेरिवेटिव के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के बराबर, अधिक परिपक्व एवं लेनदेन के लिहाज से आसान बाजार तैयार करने की प्रक्रिया बाजार अर्थव्यवस्था की स्थापना के संग-संग चलती है। पिछली एक पीढ़ी के दौरान इन मोर्चों पर प्रगति हुई है, यह अलग बात है कि इस पर काफी अधिक खर्च आया है। इसमें कोई शक नहीं कि निवेशकों को गुमराह कर की जाने वाली कुछ डेरिवेटिव योजनाओं की बिक्री रोकने के लिए और मजबूत कदम उठाए जा सकते हैं मगर बाकी के लिए बुनियादी हालात बदलना अधिक खर्चीला साबित होगा।

भारत में समाजवादी व्यवस्था में सरकार ने कई वस्तुओं की कीमतें नियंत्रित की थीं। कभी-कभी तो कानून में नियत मूल्य की परिभाषा भी तय की गई और इसका उल्लंघन करने पर कड़े दंड के प्रावधान किए गए। अन्य अवसरों पर कानून के माध्यम से यह तय कर दिया कि कौन लेनदेन कर सकता है (मसलन केवल बैंक एवं प्राइमरी डीलर को अनुमति मिली) और लेनदेन कहां हो सकते हैं (उदाहरण के लिए केवल कृषि उत्पाद विपणन समिति में)। इन कायदों का उल्लंघन करने वाले को दंडित भी किया गया। सरकार ने अर्थव्यवस्था नियंत्रित करने के लिए कई नियम-कायदे तैयार कर डाले थे, जिनका इस्तेमाल कीमतों में उतार-चढ़ाव पर नजर एवं नियंत्रण रखने (जैसे निर्यात एवं आयात पर प्रतिबंध के माध्यम, नियमन के स्तर पर बदलाव आदि से) के लिए किया गया था।

एक बाजार अर्थव्यवस्था में विभिन्न तरह के लोगों की अलग-अलग गतिविधियां आपूर्ति एवं मांग निर्धारित करती हैं। आपूर्ति एवं मांग पर नियंत्रण का असर सीधे कीमतों पर पड़ता है। समाजवादी व्यवस्था से संपन्नता की तरफ कदम बढ़ाते हुए हम एक ऐसी प्रक्रिया से होकर गुजरते हैं जिसमें कीमतें पहले सरकार के नियंत्रण में रहती हैं मगर बाद में ये किसी के नियंत्रण में नहीं रहती हैं। सुधार का वास्तविक अर्थ मात्रा एवं कीमतों पर लगी पाबंदी हटाना है। हम एक ऐसे दौर में हैं जहां मांग एवं कीमतों में बदलाव होते रहते हैं। कीमतों में उतार-चढ़ाव अच्छी बात होती है क्योंकि वे अर्थव्यवस्था को संकेत भेजते हैं जिससे बाजार में बेहतर तालमेल स्थापित हो पाता है। जब रुपये में अवमूल्यन होता है तो आयात अधिक महंगा और निर्यात सस्ता हो जाता है और भारतीय वित्तीय परिसंपत्तियां विदेशी निवेशकों के लिए अधिक आकर्षक हो जाती हैं।

बाजार अर्थव्यवस्था में कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव के अनुसार परिस्थितियां जल्द बदलती हैं तो इससे आर्थिक संपन्नता को बढ़ावा मिलता है। कुछ लोग यह चाह रखते हैं कि उनका आने वाला कल भी उनके आज की तरह हो। मगर दुनिया बदलती रहती है और बदलते हालात के साथ तालमेल बैठाना पड़ता है। मूल्य व्यवस्था ऐसे बदलाव या समायोजन के लिए रास्ता आसानी से बना देती है।

क्या कोई बीच का रास्ता है जिसके जरिये मूल्य प्रणाली के पूर्ण लाभ तो मिले, साथ ही कीमतों में उतार-चढ़ाव के नुकसान से भी कुछ हद तक बचा जा सके? हां, वित्तीय डेरिवेटिव का इस्तेमाल कर ऐसा किया जा सकता है। वित्तीय डेरिवेटिव अपने उपयोगकर्ताओं को अधिक समय उपलब्ध कराते हैं। जब रुपये में अवमूल्यन होता है तो किसी आयातक को अधिक रकम चुकानी पड़ती है और उस स्थिति में उसे अपनी कारोबारी रणनीति पर दोबारा विचार करना पड़ सकता है। मगर लघु अवधि में यानी कुछ खास महीनों या तिमाहियों के लिए वित्तीय डेरिवेटिव के जरिये रुपये के अवमूल्यन के असर से बचा जा सकता है।

विकास रणनीति तैयार करते वक्त एक अधिक सक्रिय एवं त्वरित लेनदेन वाले वित्तीय डेरिवेटिव बाजार की जरूरत महसूस होती है। एक बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में भारत के उदय के बाद देश में ऐसे बाजारों का होना आवश्यक है। हमें कीमतों में उतार-चढ़ाव की राह में आने वाली सारी बाधाएं दूर करनी चाहिए। इससे आर्थिक वृद्धि को गति मिलेगी मगर बदलती परिस्थितियों के साथ लगातार तालमेल बैठाने का झंझट भी बढ़ेगा। इस झंझट से उन लोगों को दिक्कत हो सकती है, जो जीवन में बदलाव से गुरेज करते हैं। अगर नीति निर्धारक वित्तीय डेरिवेटिव के लिए अधिक परिपक्व एवं त्वरित लेनदेन वाले बाजारों के उदय को बढ़ावा देते हैं तो इससे बाजार अर्थव्यवस्था की तरफ कदम बढ़ाने पर आने वाला खर्च कम हो जाएगा।

मगर इसके लिए इन बाजारों का आकार बड़ा होना चाहिए। वर्ष 2023-24 में भारतीय अर्थव्यवस्था में विदेश से लगभग 1 लाख करोड़ डॉलर आए और इतनी ही रकम बाहर चली गई। इन 2 लाख करोड़ डॉलर रकम से जुड़े लेनदेन में अगर आधे कीमतों में उतार-चढ़ाव से बचाव के लिए हुए होते तो लोगों (एंड यूजर) को 1 लाख करोड़ रुपये मूल्य के मुद्रा (करेंसी) डेरिवेटिव के फायदे मिलते। वास्तविक बाजार मूल्य का आकार कई गुना अधिक बड़ा करना होगा तभी वित्तीय पेशेवर ('कयास लगाने वाले' एवं 'आर्बिट्रेजर') इस 1 लाख करोड़ डॉलर का लाभ पाने के लिए गतिविधियों में शामिल होंगे। ये सभी कार्य निजी लोग करते हैं और सरकारी रकम की जरूरत नहीं होती है।

ये आंकड़े (उदाहरण के लिए एक वर्ष में मुद्रा डेरिवेटिव के 5 लाख करोड़ से 10 लाख करोड़ डॉलर के कारोबार) उन लोगों के लिए डरा सकते हैं जिन्होंने इस कारोबार में कदम नहीं रखा है। भारत में नीति निर्धारकों ने 1990 के दशक तक यह बात समझ ली थी। इन चीजों को वास्तविक रूप देने के लिए काफी मेहनत की गई थी। सबसे पहले बंबई स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) और बाद में 2000 में नैशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) में इक्विटी डेरिवेटिव कारोबार की शुरुआत तथा 2008 में मुद्रा में वायदा कारोबार की अनुमति शामिल हैं। धीरे-धीरे निजी इकाइयों ने इन बाजारों में परिचालन करना सीख लिया और वे लेन देन बढ़ाने और सही कीमतें हासिल करने लगे।

जिंस वायदा कारोबार भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है और भारत 20 से अधिक कृषि जिंसों में डेरिवेटिव कारोबार सेवाओं का पुरोधा बन सकता है। भारत की कृषि जिंस खंड में खास पहचान है। पूर्व वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने जिंस वायदा कारोबार की शुरुआत करते समय केतन पारेख प्रकरण पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की रिपोर्ट से एक अच्छी बात उठा ली। 1950 के दशक में समाजवादी माहौल के बीच जिंस वायदा कारोबार बंद कर दिया गया था। मेजर जनरल (अवकाशप्राप्त) भुवन चन्द्र खंडूड़ी ने स्थायी समिति की एक रिपोर्ट लिखी, जिससे 2007 में प्रतिभूति नियमन अधिनियम में महत्त्वपूर्ण संशोधन हुए।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने इनमें कुछ बाजारों के उभार को कई वर्षों तक रोकने का प्रयास किया। हालांकि, सरकार ने 2008 के बजट में बॉन्ड, करेंसी एवं डेरिवेटिव बाजार (एक्सचेंज ट्रेडेड करेंसी एवं ब्याज दर वायदा सहित) विकसित करने के अपने इरादे की घोषणा कर डाली। सरकार ने उचित सुरक्षा उपायों के साथ पारदर्शी क्रेडिट डेरिवेटिव बाजार तैयार करने की भी घोषणा की। ये सभी घोषणाएं बाद में क्रियान्वित हुईं मगर इससे पहले नीतिगत एवं नियमन के मोर्चे पर केंद्र सरकार में गंभीर चर्चा एवं बहुत माथापच्ची हुई।

जीडीपी के आकार का डेरिवेटिव बाजार मजबूत बुनियाद पर खड़ा होगा और इसे तैयार करने में की गई कड़ी मेहनत के लाभ मिलेंगे। मगर हाल में डेरिवेटिव कारोबार के संबंध में उठाए गए कदम हमें आगे ले जाने के बजाय पीछे धकेल देंगे। इन उपायों से विदेश में गतिविधियां बढ़ जाएंगी, इसलिए विदेशी निवेशक तो कारोबारी सुरक्षा हासिल कर लेंगे मगर स्थानीय लोग इससे वंचित रह जाएंगे। कारोबार के स्तर पर हमारी भागीदारी कम होने से अर्थव्यवस्था अधिक पीछे चली जाएगी और भविष्य में हालात संभालने के लिए कड़ी मशक्कत करनी होगी। भारत का राजनीतिक एवं नीतिगत नेतृत्व भारत को एक विकसित अर्थव्यवस्था और दुनिया में महत्त्वपूर्ण मामलों में बड़ी भूमिका निभाते देखना चाहता है। मगर 1950 के दशक में प्रचलित नीतियों एवं विचारों को दोबारा स्थापित करना इन सपनों से मेल नहीं खाता है।

(लेखक आइजक सेंटर फॉर पब्लिक पॉलिसी में मानद वरिष्ठ फेलो और पूर्व अधिकारी हैं)

नई राजकोषीय नीति से जुड़े सवाल

अर्थतंत्र

राजेश कुमार

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पिछले माह पेश किए गए तीसरी नरेंद्र मोदी सरकार के पहले केंद्रीय बजट में, चालू वित्त वर्ष के लिए राजकोषीय घाटे के लक्ष्य में 20 आधार अंकों का सुधार करते हुए इसे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 4.9 प्रतिशत पर ला दिया गया है, जो फरवरी में पेश अंतरिम बजट की तुलना में बेहतर है। यह केंद्र सरकार के राजकोषीय घाटे को कम करने के लक्ष्य की प्रतिबद्धता के अनुरूप है। पिछले वित्त वर्ष (2023-24) में भी सरकार ने राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 5.6 फीसदी के स्तर पर सीमित किया है जबकि 5.9 फीसदी बजट अनुमान था। उम्मीद से बेहतर राजस्व संग्रह के साथ ही यथार्थवादी बजट अनुमानों ने हाल के वर्षों में सरकार की मदद की है। यह वर्ष 2025-26 तक राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.5 फीसदी से नीचे लाने की मध्यम अवधि के लक्ष्य के अनुरूप है।

राजकोषीय घाटा कम करने की राह पर बने रहने के लिए सरकार की तारीफ अवश्य की जानी चाहिए जो तब थोड़ा मुश्किल लग रहा था जब इसकी घोषणा 2021 में की गई थी। हाल के वर्षों में राजकोषीय प्रदर्शन को देखते हुए उम्मीद थी कि सरकार एक नई मध्यम अवधि के उपायों की घोषणा कर सकती है। हालांकि बजट में इस बात के संकेत दिए गए थे कि सरकार आने वाले वर्षों में राजकोषीय प्रबंधन कैसे करेगी लेकिन इसने कई सवाल भी उठाए जिन पर बहस की जानी चाहिए। वित्त मंत्री सीतारमण ने अपने बजट भाषण में कहा, 'वर्ष 2026-27 से, हमारा प्रयास प्रत्येक वर्ष राजकोषीय घाटे को इस तरह रखना होगा कि केंद्र सरकार का ऋण सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में घटता रहे।' भारत का सार्वजनिक ऋण महामारी के बाद काफी बढ़ गया है और यह कमजोरियों का कारक बना हुआ है और इसीलिए ऋण-जीडीपी अनुपात में लगातार कमी लाने का लक्ष्य एक उपयुक्त राजकोषीय लक्ष्य है।

हालांकि सार्वजनिक ऋण में कमी की लक्षित गति अभी स्पष्ट नहीं है। उदाहरण के तौर पर चालू वित्त वर्ष में सरकार का अनुमान है कि केंद्र सरकार का ऋण, जीडीपी के 56.8 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच जाएगा जो वर्ष 2023-24 में 58.1 प्रतिशत था। इस गति से वर्ष 2017 में राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन (एफआरबीएम) समीक्षा समिति द्वारा सिफारिश किए गए 40 प्रतिशत के ऋण लक्ष्य तक पहुंचने में एक दशक से अधिक समय लगेगा। यह तभी संभव होगा जब अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ती रहे और अगले दशक में कोई ऐसे बाहरी झटके का सामना न करना पड़े जिसमें बड़े राजकोषीय हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़े।

इसके अलावा यह स्पष्ट नहीं है कि केंद्र सरकार के 40 प्रतिशत के ऋण लक्ष्य के साथ जीडीपी के 60 प्रतिशत की कुल ऋण सीमा प्रासंगिक भी है या नहीं जिसकी सिफारिश एफआरबीएम समीक्षा समिति ने की थी। पिछले एक दशक में भारतीय और वैश्विक दोनों अर्थव्यवस्था में काफी बदलाव आया है।

राजकोषीय नीति के लिए ज्यादा गुंजाइश बनाने के लिए भारत को अगले कुछ वर्षों में ऋण में तेजी से कमी लाने की आवश्यकता होगी। ऐसे में सरकार को मध्यम अवधि के लक्ष्यों की रूपरेखा तैयार करते हुए, ऋण में कमी करने के उपायों की जरूरत होगी। निश्चित अवधि में ऋण में उचित कमी के लिए एक व्यावहारिक लक्ष्य की भी आवश्यकता होगी। अब तक राजकोषीय घाटे को लक्ष्य के तौर पर देखा गया है। यह तय करना भी महत्त्वपूर्ण होगा कि सरकार की दी गई समय-सीमा के भीतर, ऋण के स्तर में जरूरी कमी लाने के लिए किस मात्रा में राजकोषीय घाटे का भार सह सकती है।

कड़े वित्तीय लक्ष्यों की आलोचना इस बात को लेकर होती है कि इस तरह की नीतियां अर्थव्यवस्था को और बेहतर भी बना सकती हैं, लेकिन जब अर्थव्यवस्था की स्थिति खराब होती है तब ये नीतियां और मुश्किल पैदा कर सकती हैं। ऐसा इसलिए होता है कि सरकार अच्छे समय में सुधार के कदमों के लिए तैयार नहीं होती है।

सरकारी अधिकारियों का कहना है कि सामान्य वर्ष में ऋण बढ़ाए बिना, सरकार जितना पैसा खर्च कर सकती है, वह फिलहाल जीडीपी के 3 फीसदी की तय सीमा नहीं हो सकती है जैसा कि एफआरबीएम अधिनियम में भी कहा गया है। लेकिन अब हमें ऋण को स्थिर रखने के बजाय इसे तेजी से कम करने पर ध्यान देना चाहिए। यह भी स्पष्ट नहीं है कि राज्यों को भी उसी तरह के नियमों का पालन करना होगा या नहीं जिसके तहत केंद्र सरकार अपना कर्ज कम करने की कोशिश कर रही है। इसके अलावा, कोरोना महामारी के बाद देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में सरकार के बड़े पूंजीगत खर्चों का बहुत बड़ा योगदान रहा है, जो इस साल जीडीपी के 3.4 प्रतिशत तक पहुंचने की उम्मीद है। क्या सरकार अगले कुछ सालों में भी इतना ही ज्यादा खर्च करके अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाना चाहेगी, जिससे सरकारी घाटा बढ़ता रहेगा?

इसके अलावा, मध्यम अवधि के लिए तय किए गए राजकोषीय लक्ष्यों में आमतौर पर यह देखा जाता है कि देश की अर्थव्यवस्था कितना खर्च उठा सकती है। अगर राजकोषीय घाटे का स्तर जीडीपी के 3 फीसदी से ऊपर है तब यही बात राज्यों पर भी लागू होगी जो क्या अपनी बचत से बढ़े हुए खर्च की फंडिंग कर सकते हैं?

हाल के आंकड़ों के मुताबिक, घरों की बचत पिछले कई दशकों में सबसे कम स्तर पर है, जो जीडीपी का सिर्फ 5.3 फीसदी है। भले ही इसमें सुधार हो लेकिन क्या यह इतना बढ़ेगा कि देश की जरूरतें पूरी की जा सकेंगी? अगर कंपनियां ज्यादा पैसा लगाने लगें, जो देश की तरक्की के लिए जरूरी है तो उनके पास यह पैसा कहां से आएगा? अगर सरकार ज्यादा कर्ज लेती रही तब निजी क्षेत्र को आयात से जुड़ी बचत पर निर्भर होना पड़ेगा और इससे बाहरी क्षेत्र के प्रबंधन की जटिलताएं और तेजी से बढ़ सकती हैं।

देश के विकास के इस स्तर पर एक आसान, पारदर्शी और नियम आधारित राजकोषीय ढांचे की बहुत जरूरत है। यह उस समय और भी जरूरी हो जाता है जब सरकार और कंपनियों दोनों को ही निवेश के लिए विदेशों से पैसा लाने की जरूरत होगी।

पहली बार भारत के सरकारी बॉन्ड को दुनिया के सबसे बड़े बॉन्ड सूचकांक में शामिल किया गया है और उम्मीद है कि और भी बॉन्ड शामिल होंगे। भारत को उम्मीद है कि उसकी क्रेडिट रेटिंग भी बढ़ेगी और यह उचित भी है। कुल मिलाकर, कोरोना महामारी के बाद भारत द्वारा लिए गए वित्तीय फैसलों से देश को फायदा हुआ है। अब हमें इन उपलब्धियों पर आगे बढ़ना चाहिए। इसलिए भारत को अपने वित्तीय हालात की पूरी समीक्षा करने की जरूरत है। इसके लिए एक स्पष्ट रोडमैप चाहिए जिसमें कर्ज जल्दी कम करने, अर्थव्यवस्था को लगातार बढ़ाने और इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जरूरी पैसे जुटाने के लक्ष्य शामिल हों।

आपका पक्ष

पश्चिम एशिया में शांति की जिम्मेदारी किसकी?

इस समाचार पत्र में प्रकाशित लेख 'पश्चिम एशिया में शांति पर मंडराता खतरा' एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करता है कि वहां शांति स्थापित करने की जिम्मेदारी किसकी है? पश्चिम एशिया में युद्ध विभीषिका सात दशकों से बहुत भयंकर स्थिति में है, यद्यपि इसका इतिहास और भी पुराना है। पश्चिम एशिया में इस्लामिक देशों की राजनीति, युद्धोन्माद और आतंकवाद को समझना बहुत मुश्किल है और समझ के बाहर है कि कौन किसका दोस्त और दुश्मन है? हमास प्रमुख हानिया की ईरान में हत्या और पाकिस्तान में ओसामा बिन लादेन की हत्या में समानता है और क्या अमेरिका अकेला दोषी है और अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर को आत्मघाती हमलों से उड़ाना और हजारों निर्दोषों की हत्या, अफगानिस्तान में पिछले छह दशकों में कितने सत्तापलट हो गए और साथ ही इस्लामिक देशों में राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों की हत्याएं, इन सब के लिए कौन दोषी है? इजरायल में 7 अक्टूबर, 2023 को आतंकी हमला करने से पहले हमास को क्या अंजाम नहीं पता था क्योंकि इजरायल और फिलिस्तीन के युद्ध और युद्ध विभीषिका तो इतिहास में दर्ज है? लाल सागर में हूती आतंकवादियों को समर्थन करने वालों को क्या अपना अंजाम नहीं पता? ऐसा नहीं हैं कि पश्चिमी एशिया में प्राकृतिक संसाधनों और समृद्धि की कोई कमी है लेकिन दुनिया को अपना दुश्मन बनाने की जो कला इन देशों में है वह अतुलनीय है। राजनीति, अर्थव्यवस्था, शासन में धार्मिक कट्टरता ने सब कुछ चौपट कर दिया है और दोषी कभी अमेरिका, कभी रूस, कभी भारत और कभी यूरोप होते हैं।

विनोद जौहरी, दिल्ली

इजरायली हवाई हमले के बाद रविवार को इजरायल - लेबनान की सीमा पर उठता धुआं।

रोजगार सृजन की दिशा में सही कदम

देश की शीर्ष 500 कंपनियों में युवाओं को इंटर्नशिप का अवसर देना कौशल विकास के साथ-साथ रोजगार सृजन की दिशा में सही नीयत से उठाया गया कदम है। लेकिन इसके नतीजे उद्योग जगत की सकारात्मक प्रतिक्रिया पर निर्भर होंगे। फिलहाल उद्योग जगत इस योजना के प्रति विशेष उत्साहित नहीं दिख रहा है। इसलिए सरकार को इस योजना के संबंध में उद्योगों से विचार-विमर्श करना चाहिए तथा उनकी व्यावहारिक समस्याओं एवं आपत्तियों का निदान कर तदनुसार ही दिशा निर्देश जारी करने चाहिए।

विमलेश पगारिया, बदनावर

एक सीमा तक ही सफल रहेगी इंटर्नशिप योजना

एक सीमा तक बेरोजगारी कम करने में इंटर्नशिप योजना सहायक सिद्ध हो सकती है। यद्यपि यह योजना 21 से 24 वर्ष के बेरोजगार व पूर्णकालिक अध्ययन नहीं करने वाले युवाओं के लिए ही है। एक सीमित वर्ग तो इससे लाभान्वित होगा। इंटर्नशिप योजना लागू करना कंपनियों के लिए ऐच्छिक है। दो चरणों में संपन्न होने से इस योजना से बेरोजगारों को पांच वर्ष के लिए कुछ सहयोग तो मिल ही जाएगा। किंतु यह योजना बेरोजगारी दूर करने का स्थायी समाधान नहीं है।

रमेशचंद्र कर्नावट, उज्जैन

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिजनेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू तीन देशों की अपनी यात्रा के पहले चरण में सोमवार को फिजी पहुंचीं। राष्ट्रपति मुर्मू का नाडी के हवाई अड्डे पर फिजी के उप प्रधानमंत्री विलियम गावोका, फिजी में भारतीय उच्चायुक्त पी एस कार्तिकेयन ने स्वागत किया। यह किसी भारतीय राष्ट्राध्यक्ष की इस द्वीपसमूह राष्ट्र की पहली यात्रा है। फिजी के बाद, मुर्मू न्यूजीलैंड और तिमोर-लेस्ते की यात्रा करेंगी।

दैनिक जागरण
हिंसा किसी समस्या का समाधान नहीं

बेहाल बांग्लादेश

करीब सात महीने पहले फिर से सत्ता में आई बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को जिस तरह आनन-फानन देश छोड़कर भारत आने के लिए विवश होना पड़ा, उससे यही पता चलता है कि हालात किस कदर उनके खिलाफ हो गए थे। इसे इससे भी समझा जा सकता है कि उनका इस्तीफा मांग रहे प्रदर्शनकारियों ने उनके सरकारी आवास में घुसकर तो तोड़फोड़ की ही, उनके पिता एवं बांग्लादेश के राष्ट्रपिता कहे जाने वाले शेख मुजीब की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त करने के साथ उनके नाम पर बने एक संग्रहालय को भी जला दिया। जैसी आशंका थी, शेख हसीना के पलायन करते ही सेना ने सत्ता संभाल ली और मिली-जुली अंतरिम सरकार बनाने की घोषणा की। शायद सेना इसकी तैयारी पहले से कर रही थी। शेख हसीना लगातार चौथी बार ऐसे चुनावों के जरिये सत्ता में आई थीं, जिनका प्रमुख विपक्षी दलों ने बहिष्कार किया था। चूंकि शेख हसीना ने अपने लंबे शासनकाल में बांग्लादेश को स्थिरता प्रदान की और उसे आगे बढ़ाया, इसलिए उनकी सत्ता को कोई खतरा नहीं दिख रहा था, लेकिन कुछ समय पहले आरक्षण के खिलाफ छात्रों की ओर से शुरू हुआ आंदोलन उनके लिए मुसीबत बन गया। इस आंदोलन को शीघ्र ही शेख हसीना के सभी विरोधियों और साथ ही ऐसे कट्टरपंथी संगठनों ने भी समर्थन दे दिया, जो पाकिस्तान की कठपुतली माने जाते हैं। इसके चलते आरक्षण विरोधी आंदोलन सत्ता परिवर्तन के हिंसक अभियान में बदल गया। लगता है शेख हसीना विरोधियों की चाल भांप नहीं सकीं।

हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण में भारी कटौती कर दी, लेकिन विरोधी संतुष्ट नहीं हुए। वे शेख हसीना का इस्तीफा मांगने पर अड़ गए। आरक्षण विरोधी आंदोलन के दौरान बड़े पैमाने पर हुई हिंसा और उसमें तीन सौ लोगों के मारे जाने के कारण शेख हसीना की छवि एक अधिनायकवादी शासक की बनी और पश्चिमी देश विशेषकर अमेरिका उनकी निंदा करने में मुखर हो उठा। अमेरिका उनकी नीतियों से पहले से ही खफा था, क्योंकि वह मानवाधिकार और लोकतंत्र पर उसकी नसीहत सुनने को तैयार नहीं थीं। बोजिंग और नई दिल्ली के बीच संतुलन साधने की शेख हसीना की नीति से चीन भी उनसे रुष्ट था और इसी कारण उन्हें ढाल की अपनी चीन यात्रा बीच में छोड़कर लौटना पड़ा था। इसकी भरी-पूरी आशंका है कि चीन ने पाकिस्तानी तत्वों के जरिये शेख हसीना विरोधी आंदोलन को हवा दी। उनका सत्ता से बाहर होना भारत के लिए अच्छी खबर नहीं, क्योंकि वह नई दिल्ली के प्रति मित्रवत थीं। यदि सेना के प्रभुत्व वाली अंतरिम सरकार चीन के प्रभाव में काम करती है तो यह भारत के लिए और अधिक चिंता की बात होगी। बांग्लादेश में एक अर्से से भारत विरोधी ताकतें सक्रिय हैं। उनका भारत विरोधी चेहरा आरक्षण विरोधी आंदोलन के दौरान भी दिखा। यह ठीक नहीं कि हिंसक प्रदर्शनकारी अभी भी हिंदुओं और उनके मंदिरों के साथ भारतीय प्रतिष्ठानों को निशाना बना रहे हैं।

अवैध खनन पर सख्ती

प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना समाज के हर वर्ग की जिम्मेदारी है। इसके लिए सरकार प्रयास भी कर रही है, लेकिन माफिया की सक्रियता कम नहीं हो पाई है। हिमाचल प्रदेश में खनन माफिया सीमावर्ती क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का अवैज्ञानिक तरीके से अंधाधुंध दोहन कर न केवल प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहा है बल्कि प्रदेश सरकार को भी राजस्व की हानि झेलनी पड़ रही है। अवैध खनन रोकने के लिए 14 विभागों को जिम्मेदारी सौंपी गई है लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाई है। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि हिमाचल प्रदेश में खनन से जितनी कमाई सरकार नहीं कर पाती, उससे कई गुणा अधिक माफिया कर लेता है। अवैध खनन को गंभीरता से लेते हुए उद्योग मंत्री ने पिछले दिनों कई जिलों का दौरा कर बैठकें कीं और सख्त कदम उठाने के निर्देश दिए। अब प्रदेश में कई स्थानों पर उनकी पहल का प्रभाव खनन माफिया पर कार्रवाई के रूप में दिखने लगा है। ऊना व पुलिस जिला बद्दी में अवैध खनन में संलिप्त लोगों के विरुद्ध कार्रवाई में तेजी आई है। रविवार को ऊना में 11 वाहनों के चालान काट जुर्माना वसूला गया। बद्दी में भी मुख्य संसदीय सचिव की पत्नी के नाम पर चल रहे वाहन को जब्त किया गया है। प्रदेश के अन्य जिलों में भी खनन माफिया पर शिकंजा कसने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। खनन माफिया की कमर तोड़ने के लिए सभी जिलों में व्यापक स्तर पर अभियान चलाना समय की मांग है। सुखद है कि लोग भी अब सामने आने लगे हैं और अवैध गतिविधियों की जानकारी शासन-प्रशासन तक पहुंचा रहे हैं।

अवैध खनन रोकने के लिए उठाए जा रहे कदमों के सकारात्मक परिणाम आने की आशा है

पाकिस्तान को कड़ा जवाब देने का समय

कैप्टन आर. विक्रम सिंह

जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को सक्रिय कर पाकिस्तान ने नए सिरे से परोक्ष युद्ध प्रारंभ कर दिया है। सवाल यह है कि हमारा जवाब किस तरह होगा?

जम्मू-कश्मीर को अनुच्छेद 370 और 35 ए से मुक्ति दिलाए हुए पूरे पांच वर्ष हो गए हैं। इस ऐतिहासिक परिवर्तन के बाद जम्मू-कश्मीर के परिवेश में आए गुणात्मक परिवर्तन ने वहां अलगाववाद को दरकिनार कर विकास एवं रोजगार से जुड़ी संभावनाएं जगाई हैं। परिसीमनोत्तर राजनीति को हाशिए पर धकेल कर नया विकासोन्मुख नेतृत्व खड़ा होने लगा है। लोकसभा चुनाव में हुई बंपर वोटिंग के बाद पाकिस्तान की आशंका सत्य रही है कि यदि विधानसभा चुनावों में भी ऐसा हुआ तो उससे यही माना जाएगा कि कश्मीरी जनमानस ने भारत के साथ अपने भविष्य को जोड़कर आगे बढ़ने का निर्णय ले लिया है। स्वाभाविक है कि राज्य में यह सकारात्मक बदलाव पाकिस्तान को रास नहीं आ रहा। यही कारण है कि उसने यहां आतंकवाद को नए सिरे से धार देना शुरू कर दिया है। ऐसी खबरें हैं कि पाकिस्तान राज्य में बड़ी घुसपैठ की साजिश में लगा है। कहा जा रहा है कि मुजफ्फराबाद में छह सौ एसएससी कमांडोज की यूनिट लाई गई है। इस सिलसिले में उनके कमांडिंग आफिसर सईद सलीम जंजुआ का नाम भी सामने आया है।

कुछ ही दिन पहले आतंकियों ने जम्मू के रियासी में तीर्थयात्रियों की बस पर हमले के बाद कठुआ और डोडा में सैन्य बलों पर हमला किया। भारतीय सीमा के इतने भीतर आकर आक्रमण से स्पष्ट है कि आतंकी उच्चस्तरीय प्रशिक्षित हैं। भारत सरकार ने संज्ञान लेते हुए बीएसएफ के उच्चाधिकारियों को हटा दिया है। चूंकि जम्मू-कश्मीर अब कोई अंतरराष्ट्रीय मुद्दा नहीं रहा, इसलिए पाकिस्तान का उद्देश्य इसे किसी भी तरह अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर नए सिरे से उभारने का है। पाकिस्तान को चीन की शह भी मिली हुई है। अमेरिकी मेहरबानी के चलते आइएमएफ से मिली वित्तीय मदद ने पाकिस्तानी अर्थव्यवस्था को थोड़ी-बहुत राहत भी दी है। अमेरिका के पाकिस्तान प्रेम का प्रकट लक्ष्य तो उसे चीन से दूर करना है, लेकिन उसके लिए भारत को नियंत्रित करने के लिए भी पाकिस्तान को जिंदा रखना और कश्मीर को एक अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाए रखना जरूरी है। प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा के बाद अमेरिकी राजदूत एरिक गारसेटी ने भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के तर्क पर रूस-यूक्रेन युद्ध का हवाला देते हुए कहा था कि युद्धकाल में ऐसी कोई स्वायत्तता नहीं होती और भारत संबंध गहरे तो हैं, पर इतने गहरे भी नहीं कि आप जो चाहें, वह कर डालें। यह बयान कम चेतावनी अधिक थी। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने इसका तीखा जवाब भी दिया था। अमेरिका के साथ भारत के संबंधों में फिलहाल गर्मजोशी का अभाव दिखता है। ऐसे कुछ संकेत भी हैं कि उसने भारतीय चुनावों को प्रभावित करने की भी कोशिश की। इस सबसे पाकिस्तान का आत्मविश्वास नए सिरे से बढ़ा है।

पाकिस्तान से सटे सीमावर्ती क्षेत्रों में बढ़ानी होगी सतर्कता। फाइल

पाकिस्तान की सेना ने इसका लाभ उठाया है। वे आंतरिक स्थितियों से आम जनता का ध्यान हटा कर भारत एवं हिंदू शत्रुता के एजेंडे को भुनाएं। उन्होंने कारगिल में देखा है कि भारत पूरे नियम-कायदों से युद्ध लड़ता है। विवादित और दुसरों के अवैध कब्जों वाले क्षेत्रों में चाहे वह कश्मीर ही क्यों न हो, प्रवेश नहीं करता। अतः ऐसे सीमित युद्ध के परिणामों से उनके सामने कोई अस्तित्व का संकट खड़ा नहीं होगा। इसके साथ ही चीन और अमेरिका की कूटनीति की एक बड़ी संभावना दिखेगी। इस तरह संयुक्त राष्ट्र और मुस्लिम देशों के सहयोग से कश्मीर को वापस अंतरराष्ट्रीय विवाद के केंद्र लाना संभव हो सकेगा। पाकिस्तान की अंदाजा है कि घुसपैठ की किसी उच्चस्तरीय योजना पर भारत की संभावित सैन्य प्रतिक्रिया क्या हो सकती है?

अंतरराष्ट्रीय शक्ति संतुलन का दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष यही है कि विश्व में प्रायः युद्ध ही समस्याओं का अंतिम समाधान करते दिखते हैं। शांति वार्ताएं स्थायी समाधान नहीं दे पातीं। पाकिस्तान के लगी हैं। अब पाकिस्तानी शासकों के सामने यही उपाय बचा है कि वे आंतरिक समस्याओं का समाधान होता है एवं शांति और विकास के लंबे दौर आते हैं।

जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को सक्रिय कर पाकिस्तान ने नए सिरे से परोक्ष युद्ध प्रारंभ कर दिया है। सवाल यह है कि हमारा जवाब क्या होगा? इतिहास गवाह है कि हमारे नेताओं ने देश को बांटकर आजादी का सौदा किया था। कश्मीर को बांटकर वहां भी शांति की सौदेबाजी चाही। अपनी इन आत्मघाती नीतिगत बाध्यताओं के कारण हमने कभी भी कश्मीर समस्या के स्थायी समाधान के लिए पाकिस्तान को निर्णायक रूप से परास्त करने का लक्ष्य नहीं बनाया। हमने बहुत समय गंवा दिया। आज की परिस्थितियां यही अपेक्षा करती हैं कि हम अपने दृष्टिकोण में आधारभूत नीतिगत परिवर्तन के साथ लक्ष्य नियत करें और राष्ट्रहित के मार्ग पर पूरी शक्ति से बढ़ने का निर्णय लें।

(लेखक पूर्व प्रशासनिक एवं सैन्य अधिकारी हैं)

response@jagran.com

सुनिश्चित हो परीक्षाओं की शुचिता

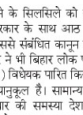

सुरेंद्र किशोर

भर्ती परीक्षाओं के साथ-साथ स्कूल-कालेज की परीक्षाओं में भी कदाचार रोकने की दिशा में ठोस कदम जरूरी हैं

आमहै स्कूली परीक्षाओं में नकल। फाइल

प्रश्नपत्र लीक होने के सिलसिले को रोकने के लिए केंद्र सरकार के साथ आठ राज्य सरकारों ने भी इससे संबंधित कानून बनाए हैं। हाल में बिहार सरकार ने भी बिहार लोक परीक्षा (अनुचित साधन निवारण) विधेयक पारित किया है। यह सराहनीय और समयानुकूल है। सामान्य और भर्ती परीक्षाओं में कदाचार की समस्या देशव्यापी है। यह जरूरी था कि केंद्र के साथ राज्य सरकारें भी इसे रोकने की दिशा में कदम उठातीं। भर्ती परीक्षाओं के अलावा सामान्य परीक्षाओं में भी कदाचार रोकने की दिशा में ठोस काम होना चाहिए, तभी नए कानून कारगर हो पाएंगे। यह संयोग नहीं है कि नीट में प्रश्नपत्र लीक के केंद्र हजारीबाग और पटना रहे।

बिहार के प्रश्नपत्र लीक रोधी कानून में भी दस साल तक की सजा और एक करोड़ रुपये के जुर्माने का प्रविधान किया गया है। इससे कानून का उल्लंघन करने वालों में अधिक भय पैदा होगा। इससे पहले बिहार में 1981 में नकल विरोधी कानून बना था। उसके तहत छह महीने की जेल और दो हजार रुपये के जुर्माने का प्रविधान था। वह कानून तनिक भी कारगर साबित नहीं हुआ। बिहार ने जो नया कानून बनाया है, उसके तहत तेजर मुकदमों की जांच डीएससी स्तर के अधिकारी करेंगे। पुराने कानून में ऐसा प्रविधान नहीं था। बिहार सरकार पेपरलीक कांड की जांच बिहार पुलिस के अलावा किसी अन्य एजेंसी से करा सकेगी। बिहार का यह कानून जिन संस्थाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं पर लागू होगा, उनमें बिहार लोक सेवा आयोग, बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग, बिहार कर्मचारी चयन आयोग, बिहार पुलिस अवर सेवा आयोग, केंद्रीय सिपाही चयन परिषद, बिहार तकनीकी सेवा आयोग शामिल हैं। यह सब ठीक है, लेकिन प्रश्न है कि क्या स्कूल-कालेज और विश्वविद्यालय स्तर की परीक्षाओं को कदाचारमुक्त किए बिना भर्ती परीक्षाओं में जारी कदाचार को पूर्णतः रोका जा सकता है? यह सवाल बिहार के सामने ही नहीं, सभी राज्यों के समक्ष है। आखिर आज देश के कितने राज्यों के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा-परीक्षा हो पा रही है? शिक्षा-परीक्षा को सुधारे बिना भर्ती परीक्षाओं के लिए कितने सुशिक्षित उम्मीदवार मिल पाएंगे? इसलिए अगले कदम के तहत राज्य सरकारों को वहां जारी गंदगी की भी सफाई के लिए कारगर कदम उठाने होंगे। इस दिशा में अब तक जो भी कदम उठाए गए, वे विफल ही रहे हैं। समय-समय पर अनेक राज्यों में सच्ची परीक्षा और सच्ची पढ़ाई की कोशिशें हुईं, लेकिन निहित स्वार्थी तत्वों ने उन्हें विफल कर दिया। वे तत्व आज भी कमजोर नहीं हुए हैं। सरकारें हर स्तर की परीक्षाओं को कदाचार से मुक्ति के लिए अपनी कठोर इच्छाशक्ति का इस्तेमाल करें।

उत्तर भारत के कई राज्यों और खासकर बिहार की शिक्षा-परीक्षा में गिरावट की शुरुआत पहले ही हो चुकी थी, लेकिन 1995 तक बिहार में उसकी हालत ऐसी दयनीय हो चुकी थी कि कई राज्य सरकारों ने बिहार इंटर काउंसिल द्वारा जारी प्रमाणपत्रों को मानने से ही इन्कार कर दिया था। कई मामलों में जाली अंक पत्र और प्रमाण पत्र भी जारी होने लगे थे। उस स्थिति से उबकर पटना हाई कोर्ट में लोकहित याचिका दायर की गई। हाई कोर्ट ने आदेश दिया कि जिलाधिकारी और प्रमंडलीय आयुक्त कदाचारमुक्त परीक्षाएं आयोजित कराने के लिए जिम्मेदार होंगे। इसके चलते 1996 में बिहार में मैट्रिक और इंटर की कदाचारमुक्त परीक्षाएं हुईं। 1996 की इंटर साइंस की परीक्षा में सिर्फ 15 प्रतिशत परीक्षार्थी ही उत्तीर्ण हो सके थे। पटना जिले में मैट्रिक परीक्षा में सिर्फ 16 प्रतिशत परीक्षार्थी ही सफल हो सके। कमोबेश ऐसा ही परिणाम अन्य जिलों में रहा। नतीजतन कालेजों में एडमिशन के लिए विद्यार्थियों का अकाल सा हो गया। शिक्षा माफिया के पांव उखाड़ना इतना आसान काम नहीं था। उन्हें शासन से अघोषित रूप से यह आश्वासन मिल गया कि अब आगे की परीक्षाओं में कड़ाई नहीं होगी। इस मोर्चे पर शिक्षा माफिया ही अंततः जीत गया और दौगुने उत्साह से परीक्षाओं में कदाचार करने लगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज बिहार में शिक्षा-परीक्षा का हाल वैसा ही हो गया है, जैसा 1995 में था। होना तो यह चाहिए था कि परीक्षा में कड़ाई जारी रहती। शिक्षा-परीक्षा में सुधार के लिए यह जरूरी था, पर जिन्हें एक समय शिक्षा मंत्री ने शिक्षा माफिया करार दिया था, उन्हीं लोगों ने ऐसी जुगत भिड़ाई कि दोबारा कदाचार शुरू हो गया। 1996 की कड़ाई के बाद के वर्षों में कदाचार की ऐसी छूट मिली कि एक दफा तो जो छात्र बिहार की बोर्ड परीक्षा में पूरे राज्य में प्रथम आया था, वह दिल्ली में ऊंची कक्षा में नामांकन के बाद एक सेमेस्टर भी पास तक नहीं कर सका।

देश भर में शिक्षा क्षेत्र एक एसा 'उद्योग' बन गया है, जिसमें कोई घाटा नहीं होता। इस उद्योग में सिर्फ आधुनिक तकनीक के साथ-साथ उच्चस्तर के जनसंपर्क की आवश्यकता होती है। इस उद्योग से जुड़े एक 'कारखाने' का जिक्र अपनी पुस्तक 'इंटर काउंसिल एक हकीकत' में दिवंगत प्रोफेसर नागेश्वर प्रसाद शर्मा ने किया है। उस अल्पज्ञात कारखाने यानी कालेज के इंटरमीडिएट के परीक्षार्थियों का जब एक खास साल का रिजल्ट देखा गया तो पता चला कि उसके कुल 477 में से 461 परीक्षार्थियों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास की। जब इस मामले की जांच हुई तो पाया गया कि वास्तव में सिर्फ तीन छात्रों को ही प्रथम श्रेणी मिली थी। आज देश के तमाम शिक्षा संस्थान ऐसे हैं, जो मात्र शिक्षा के कारखाने बनकर रह गए हैं और जो 'घटिया माल' का ही अधिक उत्पादन करते हैं। अपवाद को छोड़कर इनके संचालकों को उन तमाम लोगों का प्रत्यक्ष और परोक्ष संरक्षण हासिल होता है, जिन पर कदाचारमुक्त शिक्षा और परीक्षा उपलब्ध कराने की संवैधानिक जिम्मेदारी है।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

मित्रता का आलोक

मित्रता का भाव मनुष्य के जीवन में उत्साह एवं उमंग का संचार करता है। मैत्री के लिए समर्पण का होना अत्यंत आवश्यक है। मित्र वही है जो हर सुख-दुख में प्रतिपल साथ निभाए। अच्छा मित्र मिलना सौभाग्य की बात है। एक सच्चा मित्र वह भी है जो हमें गलत मार्ग पर चलने से रोकता है। वह हमारा सच्चा हितैषी होता है। रक्त के संबंध के अतिरिक्त मित्रता ही वह संबंध होता जो अत्यंत विश्वसनीय होता है, जिसके लिए समर्पण एवं मधुर भावनाओं के कपाट स्वतः खुलने लगते हैं।

भगवान राम और सुग्रीव की मित्रता जगत प्रसिद्ध है। माता सीता की खोज में सुग्रीव एवं उनकी वानर सेना ने पूरे समर्पण के साथ कार्य किया। रावण से युद्ध किया। अपने प्राणों को संकट में डालकर प्रभु श्रीराम की सहायता की। प्रभु श्रीराम ने भी अपने मित्र सुग्रीव के लिए बाली से युद्ध कर बाली का वध किया। इसी तरह भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता को कौन नहीं जानता। वहां समर्पण की पराकाष्ठा को देखा जा सकता है। कर्ण और दुर्योधन की मित्रता भी सुप्रसिद्ध है कि कर्ण ने सत्य एवं धर्म की राह के बजाय मित्रता को वरीयता दी।

वर्तमान समय में मित्रता स्वार्थ की भेंट चढ़ती जा रही है। यह सर्वथा अनुचित है। मित्रता में वैचारिक साम्य देखा जाता है माया का आकर्षण नहीं। जो व्यक्ति सामने वाले के प्रभाव को देखकर उससे मित्रता की सोचते हैं, वे दीर्घकालिक, समर्पणयुक्त एवं स्नेहिल मित्रता के सुपात्र नहीं होते। न ही उन्हें यह सब कुछ प्राप्त हो पाता है। मित्रता में मधु सी मिठास होती है, जो दोनों ही ओर से प्रस्फुटित होती रहती है। मित्र कभी भी अपने साथी को अन्याय, असत्य एवं कुमार्ग पर चलने को विवश नहीं करता। और न ही वह अपने मित्र को इन मार्गों का पथिक बनने देता है। वह ऐसा होते देख तुरंत अपने मित्र को रोक देता है। उसे मार्ग बदलने की सलाह देने लगता है।

ललित शौर्य

मोइदम के संरक्षण की चुनौती

ओंद्रेराज सुथार

मोइदम न केवल अहोम राजवंश, बल्कि पूरे असम की संस्कृति और परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं

हाल में असम के 'मोइदम' यानी अहोम राजवंश की टीला-दफन प्रणाली' को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। यह भारत की 43वीं संपत्ति है जिसे इसमें शामिल किया गया है। यह असम की तीसरी विश्व धरोहर संपत्ति है, इससे पहले काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और मानस वन्यजीव अभयारण्य को 1985 में प्राकृतिक श्रेणी में शामिल किया गया था। उल्लेखनीय है कि यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल विरासत को सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित श्रेणियों में वर्गीकृत करता है। यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में सबसे अधिक 59 स्थल इटली के हैं, इसके बाद 57 स्थलों के साथ चीन का स्थान है। भारत 43 स्थलों के साथ छठे स्थान पर है। मोइदम की पहचान मिलना न केवल असम के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए गर्व का विषय है। ध्यातव्य है कि पूर्वोत्तर भारत में अहोम साम्राज्य द्वारा निर्मित शाही टीला दफन स्थल मोइदम पूर्वी असम में पटकाई पर्वतमाला की तलहटी में स्थित हैं। इन दफन टीलों को अहोम द्वारा पवित्र माना जाता था और ये उनकी अनूठी अंत्येष्टि प्रथाओं को दर्शाते हैं। अहोम लोग 13वीं शताब्दी में असम पहुंचे और चराइदेव को अपना पहला शहर और शाही कब्रगह का स्थल बनाया। 13वीं से 19वीं शताब्दी ईस्वी तक (600 वर्षों तक) अहोम ने पहाड़ियों, जंगलों और पानी जैसे प्राकृतिक तत्वों का उपयोग करके मोइदम या आत्मा के लिए घर का निर्माण किया। अपने राजाओं को दिव्य मानते हुए अहोम ने शाही दफन के लिए मोइदम बनाने की एक अलग अंत्येष्टि परंपरा विकसित की।

यूनेस्को द्वारा मोइदम को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता देने के पीछे कई कारण हैं। इसकी वास्तुकला अपने आप में अनूठी है और यह दक्षिण-पूर्व एशियाई और भारतीय परंपराओं का एक अनोखा मिश्रण प्रस्तुत करती है। ये स्थल अहोम राजवंश के 600 वर्षों के शासन का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो क्षेत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण काल था। इस लंबे शासनकाल ने असम और पूरे उत्तर-पूर्वी भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया। मोइदम न केवल अहोम राजवंश को, बल्कि पूरे असम की संस्कृति और परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन स्थलों से जुड़ी तमाम परिपाटियां अभी भी जीवित हैं।

मोइदम के संरक्षण में कई चुनौतियां हैं, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इन प्राचीन स्मारकों को लगातार मौसम के प्रभावों का सामना करना पड़ता है, जो उनकी संरचना को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसके अलावा मानवीय गतिविधियां भी एक बड़ी चिंता का विषय हैं। अनियंत्रित पर्यटन और आसपास के क्षेत्रों में तेजी से हो रहा शहरीकरण इन स्थलों के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

आरक्षण का होगा विस्तार

'एससी-एसटी आरक्षण पर उचित फैसला' शीर्षक से लिखे आलेख में संजय गुप्त ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का उचित विश्लेषण किया है। वास्तव में सामाजिक न्याय के उपकरण माने जाने वाले आरक्षण का उद्देश्य ही यही है कि हाशिए पर रहने वाले वंचित लोगों को उचित अवसर दिला सके। हालांकि वर्तमान में जारी आरक्षण व्यवस्था यह कार्य कर पाने में असफल साबित हो रही है, क्योंकि आरक्षण से आच्छादित समाज भी दो वर्गों में विभाजित होता जा रहा है। एक वह वर्ग जो कई पीढ़ियों से आरक्षण का लाभ लेकर पूर्ण सक्षम बन चुका है और आगे भी आरक्षण का लाभ लेने के लिए अर्हता हासिल किए हुए है। दूसरी ओर वह वर्ग है, जो आरक्षण का अपेक्षित लाभ नहीं उठा पाया और विकास की मुख्यधारा से बाहर है। अब समय आ गया है कि इस विषय पर गंभीर मंथन किया जाए और सबको बराबरी का अवसर प्रदान करने की राह प्रशस्त की जाए। हालांकि वर्तमान राजनीति को देखते हुए इस समय ऐसा कर पाना संभव नहीं लग रहा। फिर भी समय की मांग है कि सभी राजनीतिक दल और नेता कोरी बयानबाजी छोड़कर वंचितों के वास्तविक हित से जुड़े इस मुद्दे पर गंभीरता से एक मंच पर खड़े हों, जिससे हर गरीब को समान अवसर मिल सके और सामाजिक न्याय सुनिश्चित हो।

बेदप्रकाश पांडेय, अंबिकर नगर (उप्र)

जातिवाद का दंश

संसद से लेकर अखबार की सुर्खियों तक आजकल जाति-जाति की रट ही सुनाई पड़ रही है। हर दल के बयानवीर इस विषय पर बहुत मुखर हो रहे हैं। इस बीच देश के सर्वोच्च न्यायालय ने अनुसूचित जातियों के आरक्षण में उपजातियों को आरक्षण के पक्ष में निर्णय दिया है जिसे लेकर कोई दल अपना मुंह खोलने को तैयार नहीं है। कारण, केवल और केवल वोट बैंक। जातिगत जनगणना के समर्थक भूल रहे हैं कि आज का समाज इन बातों से बहुत आगे निकल चुका है। लोग सच्चाई को जानते हैं। आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम आरक्षण की बात करते हैं और वह भी जाति के आधार पर। बसुधैव कुटुंबकम् की सनातन परंपरा वाले देश में हम मात्र वोट के लिए समाज को जाति-संप्रदाय के नाम पर बांटने के लिए तुले हैं। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए जहां स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा एवं अवसरों की पर्याप्तता पर बात होनी चाहिए वहां हमारे राजनीतिक दल जाति-देश से आगे नहीं निकल पा रहे हैं। कुछ राजनीतिज्ञों का यह एक ऐसा चक्रव्यूह है जो समाज को पंगु बनाता है। समाज का हर वर्ग सुशिक्षित, स्वस्थ हो, सुरक्षित हो एवं उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाकर संपन्न हो, प्रयास इस दिशा में होने चाहिए। पर यह तो कठिन और लंबी डगर है जिसपर अधिकांश राजनीतिक दल बात नहीं करना चाहते। उन्हें तो बस सत्ता-सुख चाहिए जिसे पाने के लिए वे वोट बैंक की चाह में किसी भी स्तर तक जाने के लिए तैयार हैं। अब वह दिन दूर नहीं जब हर वोटर राजनीतिक दलों से प्रश्न करेगा कि रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए उनकी कार्यनीति क्या है, शिक्षा, हेल्थ और सुरक्षा के लिए उनकी क्या विचारधारा है।

योगराज, खरड़ (पंजाब)

बंद हो आरक्षण पर राजनीति

'एसी-एसटी आरक्षण पर उचित फैसला' शीर्षक से युक्त लेख में संजय गुप्त का यह कथन गौरतलब है कि 'आरक्षण वोट बैंक की राजनीति का जरिया नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का माध्यम है'। स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने गरीब और वंचित वर्ग में शुमार होने वाली अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति को शिक्षा एवं सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था इसी सद्भाव के साथ लागू की थी। लेकिन कालांतर में बिकुत जातिगत राजनीति ने इस आरक्षण व्यवस्था के सैवैधानिक सद्भाव को गहरा आघात दिया। सामाजिक न्याय का भी यही तकाजा है कि जो वास्तव में अपनी गरीबी और पिछड़ेपन के कारण समाज की मुख्यधारा से कटे हुए हैं उन्हें ही आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए, साधन सम्पन्न लोगों को नहीं। डा. बीपी पांडेय, अलीगढ़ (उप्र)

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। यथासंभव विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****